वर्ष 48 अंक 2 फरवरी 2021

₹15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

• वर्ष 48 • अंक 2 • फरवरी 2021 • पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**

ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9

हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,

नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर

सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कांलोनी,

दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक

सुलेख साथी

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200

Fax: 01127608215

Email: editorial@nirankari.org

Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले

5. सम्पूर्ण अवतार बाणी

6. अनमोल वचन

16. समाचार

44. पढ़ो और हँसो

48. क्या आप जानते हैं?

49. रंग भरो

50. कभी न भूलो?

चित्रकथाएं

12. दादा जी

34. किट्टी

कविताएं

7. कहे प्रभात सुहानी
: घमंडीलाल अग्रवाल

7. सुबह का सूरज
: गोविन्द भारद्वाज

17. बसंत आया
: गफूर 'स्नेही'

17. आ गया बसंत
: सुमेश निषाद

21. पुष्प
: डॉ. सेवा नन्दवाल

21. ऋतु
: राधेलाल 'नवचक्र'

25. तितली
: मु. जलालुद्दीन खान

30. उठ जाओ गुड़िया रानी
: रावेन्द्र कुमार रवि

47. जागो बच्चो हुआ विहान
: जी.पी. शर्मा

कहानियां

8. बड़ा कौन?
: परशुराम शुक्ल

18. चार रास्ते
: राजकुमार जैन

22. खाली हाथ
: ईलू रानी

28. दोस्ती का मतलब
: डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

32. वरदराज का कायाकल्प
: नीलम 'ज्योति'

39. स्वतन्त्रता सभी को प्रिय
: बलतेज कोमल

46. झूठी मित्रता का फल
: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

विशेष/लेख

20. छोटी-सी बात
: रूपनारायण काबरा

24. शत्रु को चकमा देने में ....
: कमल सोगानी

26. चींटीखोर
: ऋषिमोहन श्रीवास्तव

27. इन्सानियत का प्रेम
: अर्चना सोगानी

31. कौन थे तात्या टोपे
: रजनी मिश्रा

38. जंगली भैंसा
: किरणबाला

42. छोटा-सा तिल ...
: दीपांशु जैन

शत शत नमन

इस संसार में शायद ही कोई ऐसा प्राणी होगा जो अपमानित होना चाहता हो और शायद ही कोई ऐसा प्राणी होगा जो सम्मानित न होना चाहता हो। कोई भी व्यक्ति यह नहीं चाहता कि उसे कोई अपमानित करे। उस पर क्रोध करे अपितु वह चाहता है कि उसे सम्मान मिले, प्यार मिले, मान मिले, अच्छा व्यवहार मिले। उसे कोई कटु वचन न बोले, उससे कोई छल-कपट न करे, द्वेष न करे और वह सबसे आगे बढ़े भी और रहे भी।

हर व्यक्ति जब उम्र में छोटा होता है तो उसे माता-पिता के प्यार-दुलार के साथ-साथ अनेकों बार डांट-डपट भी झेलनी पड़ती है और उनके क्रोध का भी सामना करना पड़ता है। माता-पिता, गुरुजनों की यह डांट-डपट अनायास मिलती ही रहती है। कुछ बच्चे इसको माता-पिता, गुरुजनों, शिक्षकों द्वारा दी गई सजा समझ लेते हैं। यहीं से वे उसे अपने मान-सम्मान का मापदंड समझने लगते हैं। अगर उसकी हर बात मान ली जाती है तो वह इसे प्यार समझता है और उसकी बात नहीं मानी जाती तो वह उसे अपनी उपेक्षा या अवहेलना मानने लगता है।

वही बच्चे बड़े होकर भी इस तरह की सोच को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाते रहते हैं। यही धीरे-धीरे अभिमान एवं अहंकार तुष्टि का कारण बन जाता है। अगर वही व्यक्ति किसी उपाधि से युक्त हो जाता है तो उसकी अपेक्षाएं अपने नीचे काम करने वाले सहयोगियों से और भी अधिक हो जाती है जिससे वह अपने-आपको सम्मानित महसूस करता है।

प्रिय साथियो! आज विचार का विषय यह है कि क्या सम्मान और अपमान किसी वस्तु और व्यवहार पर आधारित है या किसी अपेक्षा और उपेक्षा पर। कोई भी व्यक्ति किसी से भी अपेक्षा कर लेता है; कर सकता है परन्तु यह निश्चित नहीं कि उसकी अपेक्षा पूरी होगी भी या नहीं। मन ही मन वह निर्णय स्वयं ही लेना शुरू कर देता है कि मेरा अमुक कार्य अगर यह व्यक्ति पूरा कर देगा तो मेरे दिल में उसकी इज्जत बढ़ जाएगी और अगर पूरी नहीं हुई तो वह मेरे मन से ही उतर जाएगा। कार्यसिद्धि न होने पर उस व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आना शुरू हो जाता है।

हम मान या सम्मान, प्रतिष्ठा, इज्ज़त किसी को तभी देते हैं जब हमारा कोई निहित स्वार्थ पूरा होता है। इसी प्रकार अन्य लोग भी हमें मान-सम्मान, प्रतिष्ठा आदि तभी देते हैं जब उनका निहित स्वार्थ पूरा होता हो। इसका अर्थ यह हुआ कि मान-सम्मान, प्रतिष्ठा इत्यादि केवल निहित-स्वार्थों की पूर्ति के साधन बन गए हैं परन्तु यह तो स्वार्थ-सिद्धि हुई, एक व्यापार ही हुआ। व्यक्ति मान-सम्मान का मोहताज हो गया है। यह संस्कार, सीख बचपन से ही बच्चे हमारे किए हुए व्यवहार से अनुकरण कर लेते हैं।

प्यारे साथियो, हमें अपने व्यवहार को इतना ऊँचा उठाना है कि हम सभी कार्य तटस्थ और निरपेक्ष भाव से करते जाएं। यही हमारे व्यक्तित्व में निखार लाएगा फिर हमें सम्मान मांगना नहीं पड़ेगा, अपेक्षा करनी नहीं पड़ेगी वह स्वयं ही हमारे पीछे-पीछे आ जाएगा। इसी प्रकार हम अपने व्यक्तित्व को, चरित्र को इतना ऊपर उठाएं कि जो हमारा सम्मान कर रहा है वह स्वयं को गौरवान्वित महसूस करे और अगर गलती से भी अपमान कर दे तो वह अपने-आपको ही अपमानित महसूस करने लगे। ऐसी महान विभूतियां बहुत ही दुर्लभ होती हैं। हमारे बीच ऐसी ही महान विभूति का जन्म 23 फरवरी, 1954 को हुआ था जिनका नाम सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज है। हम आज भी उन्हें याद करके अपने-आपको सम्मानित महसूस भी कर रहे हैं और उनका आशीष भी ले रहे हैं। हम सभी बाबा हरदेव सिंह जी को अन्तर्मन से, हृदय से शत-शत नमन करते हुए अपने-आपको कृतार्थ मानते हैं।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 228

इक नूं जाण के घट घट अन्दर सभनां दे नाल प्यार करन।
इक नूं जाण के घट घट अन्दर सभनां दा सत्कार करन।
गुण गावण नित एसे इक दे एसे दा दीदार करन।
एसे इक दे नाल जोड़ के बेड़ा जग दा पार करन।
स्वास स्वास इस इक नूं सिमरण दूजा कदे ध्यावनण ना।
कहे अवतार ओह पूरे गुरसिख इक नूं कदी भुलावण ना।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा एक है, इस एक को जानकर हर एक से प्यार करना है, हर एक का सत्कार करना है। परमात्मा एक है इसे सभी स्वीकार तो करते हैं लेकिन इस एक प्रभु को जानते नहीं है। सद्गुरु की कृपा से इसे जाना जा सकता है। जब इस एक प्रभु को हर घट में विराजमान जान लिया जाता है तभी सबमें प्रभु का रूप नज़र आता है। जब सबमें प्रभु है तो नफ़रत किससे की जाए? तब सबसे प्यार ही किया जाता है, सबका आदर-सत्कार ही किया जाता है। सन्तों की यही निशानी होती है कि वे प्यार सभी से करते हैं पर नफ़रत किसी से नहीं करते।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जब मानव अपने जीवन की नैया सद्गुरु के हवाले कर देता है और पूरी तरह से इसका आश्रय ले लेता है तब उसकी जीवन नैया आसानी से भवसागर से पार हो जाती है। फिर वह इस एक के ही निरन्तर गुण गाता है। सब जगह और सभी में इस एक के ही दर्शन करता है। उसकी अवस्था इस एक प्रभु से जुड़कर सहज और सरल हो जाती है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि पूर्ण सद्गुरु से शिक्षा प्राप्त करके पूर्ण गुरसिख बनने के बाद वह इस एक प्रभु को कभी भूलता नहीं, हर स्वास इसका ही सुमिरण, इसका ही ध्यान करता है। इस एक से हटकर उसका ध्यान कहीं और नहीं जाता। इस एक के अतिरिक्त वह किसी अन्य की पूजा, उपासना एवं वंदना करने का मन में ध्यान भी नहीं लाता। गुरसिख की हर स्वास में इस प्रभु का ही सुमिरण रहता है। अंग-संग व्याप्त इस परमात्मा के अलावा उसको संसार की कोई अन्य बात आकर्षित नहीं करती। उसके लिए सबमें बड़ा आकर्षण और सबसे प्रिय यह परमात्मा ही होता है।

बाबा अवतार सिंह जी गुरसिख के जीवन का सार बता रहे हैं कि एक का ही ध्यान, एक का ही सुमिरण, एक के ही दर्शन-दीदार करते हुए गुरसिख सबसे प्यार सबका सत्कार करते हैं। सबका भला सोचते और सबका भला करते हैं। इस जीवन यात्रा को आनन्दपूर्वक व्यतीत करते हुए सहजता से तय करते हैं। इस एक प्रभु को कभी भूलते नहीं, सदैव इसे याद करते हैं और सुख पाते हैं।

संग्रहकर्ता : गुरचरण आनन्द

अनमोल वचन

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। गुरुओं-पीरों-अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही मानव कल्याण सम्भव है।

★ हैवानियत को इन्सानियत में बदलने और नफरत को प्यार में तब्दील करने की जरूरत ही विश्व की सबसे बड़ी क्रांति है।

★ भक्ति को पूर्ण करने का एक ही तरीका है 'एक मालिक' से नाता जोड़ना।

★ जो प्रभु भक्त होते हैं वे प्रभु इच्छा को ही सबसे ऊपर मानते हैं। जो भी प्रभु करता है वह हमारी भलाई के लिए करता है।

★ इन्सान को सांसारिक पदार्थों की कोई कमी नहीं है जो कोई कमी है तो वो है प्यार, आपसी भाईचारे और मिलवर्तन की।

★ ज्ञान और कर्म के संगम से ही पृथ्वी स्वर्ग बनेगी।

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

★ अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है। **– शोपेनहावर**

★ मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। **– वाल्टेयर**

★ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो।

– चेम्सफोर्ड

★ दानशीलता मन का गुण है हाथों का नहीं।

– एडिसन

★ यदि तुम अज्ञानता के कारण भगवान को नहीं देख सकते तो इसका कारण यह नहीं कि भगवान नहीं है। **– रामकृष्ण परमहंस**

★ जहाँ इच्छा बड़ी होती है, वहाँ चुनौतियां बड़ी नहीं होतीं। **– महात्रिया रा**

★ दुनिया का अस्तित्व शस्त्रबल पर नहीं, सत्य, दया और आत्मबल पर है।

– महात्मा गाँधी

★ मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन सदा जंजीरों में जकड़ा रहता है। **– रूसो**

★ गुलाब के फूल देनेवाले हाथों से खुशबू चिपकी रहती है। **– चीनी कहावत**

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

कहे प्रभात सुहानी

चलता-फिरता विद्यालय है,
प्यारी दादी-नानी।

देखभाल बच्चों की करती,
सुखद भविष्य बनाए।
खाना, पीना, सोना जगना,
अच्छी तरह सिखाए।।

उनके सम्मुख हर शैतानी,
भरने लगती पानी।

खेल-खेल में काम बड़े कर,
सबके दिल को जीते।
भरी प्यार से रहे लबालब,
नहीं कभी भी रीते।।

तेवर जब अपने बदले तो,
भाग जाए मनमानी।

पापा-मम्मी की दिक्कत को,
पलक झपकते हर ले।
घर-बाहर के हल्के भारी,
सब कामों को कर ले।।

और रात सोने से पहले,
कहती नई कहानी।

नये दौर में हुई जा रही,
मुख्य भूमिका इनकी।
बच्चों का विकास इनसे ही,
ये शुरुआतें दिन की।।

दादी-नानी को इज्जत दें,
कहे प्रभात सुहानी।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

सुबह का सूरज

सुबह का सूरज,
देता उजियारा है।
लाल-पीला यह,
लगता प्यारा है।।

गोल गेंद भारी,
लगती सुन्दर है।
आग और शोला,
इसके अन्दर है।।

नरम-नरम धूप,
भाती है मन को।
मिलता नवजीवन,
पुष्प चमन को।।

सुन इसकी आहट,
भागे अंधियारा है।
सुबह का सूरज,
देता उजियारा है।।

कहानी : परशुराम शुक्ल

बड़ा कौन?

एक समय की बात है। सागर के किनारे हंसों का एक जोड़ा रहता था। सागर और हंस बहुत अच्छे मित्र थे। उन दोनों में निस्वार्थ मित्रता, निश्छल प्रेम और प्रगाढ़ स्नेह था। दोनों एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी थे।

सागर और हंस अच्छे मित्रों की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे कि अचानक एक दिन सागर के मन में एक कुविचार आया। उसने अपने मित्र हंस से कहा– 'मित्र हंस! यह बताओ हम दोनों में कौन बड़ा है?'

हंस इस प्रश्न का आशय समझ नहीं पाया। उसने उत्सुकता से पूछा– भैया! मैं समझा नहीं।

सागर ने मन की मन अपनी गहराई नापी और बोला– मैं तुमसे बड़ा हूँ। मेरी विशालता से तुम परिचित तो होगे ही। मेरा विस्तार देखो, दूर-दूर जहाँ तक देखो मेरा जल हिलोरे मारता दिखाई देता है। आज तक कोई मेरी थाह नहीं पा सका, इसलिये मैं बड़ा हूँ।

पक्षियों के राजा हंस को भला यह कैसे सहन होता? उसने अपने उज्ज्वल पंखों व सुन्दर शरीर को निहारा और कहने लगा– नहीं! मैं तुमसे बड़ा हूँ। मेरा रूप-रंग देखो, मेरा सौन्दर्य देखो, मेरा धवल वर्ण आँखों को कितनी शीतलता देता है। मेरी मोहक देह सबका मन मोह लेती है। मैं पक्षियों का सिरमौर हूँ। मैं बड़ा हूँ।

दोनों मित्र अपनी-अपनी हठ पर अड़े थे। दोनों एक-दूसरे को अपनी बात मनवाना चाह रहे थे। दोनों अपने गुण और विशेषताओं के उदाहरण प्रस्तुत कर एक-दूसरे को नीचा दिखा रहे थे।

दोनों मित्रों की इस हठधर्मी और मूर्खतापूर्ण वार्तालाप को सुनकर हंसनी को बड़ा दुख हुआ। वह मन ही मन सोचने लगी कि कहीं इतनी-सी बात पर दोनों पुराने और अच्छे मित्र एक-दूसरे के दुश्मन न बन जायें।

हंसनी ने बहुत सोच-विचार करने के बाद हंस से कहा– 'प्रिय! व्यर्थ में लड़ने से अच्छा है कि हम किसी अन्य स्थान पर रहने लगें।' इस तरह समझा-बुझाकर हंसनी अपने हंस को कुछ दूरी पर बहने वाली एक नदी के पास ले गयी और वहीं रहने लगी।

हंस सागर से दूर रहकर सदैव बड़ा उदास रहता था।

उसकी उदासी को देखकर एक दिन हंसनी बोली– प्रिय हंस, तुम्हें अपनी भूल का फल तो भुगतना पड़ेगा। तुमने जरा-सी बात को बढ़ाकर अपना एक अच्छा और पुराना साथी खो दिया। मुझे तो तुम दोनों में कोई बड़ा नहीं लगता। बड़ा तो वह होता है जो दूसरों का सम्मान करे। बड़प्पन की बात तो यह थी कि तुम दोनों एक-दूसरे का आदर करते और जीवन भर साथ-साथ प्रेम से रहते। अब तो हमें इस छोटी-सी नदी के किनारे ही निर्वाह करना होगा।

हंसनी की बात सुनकर हंस को अपनी भूल का एहसास हुआ। उसे अपने मित्र सागर की याद आने लगी।

इधर सागर भी अकेला रह गया था। उसे भी अपने व्यवहार पर पछतावा होने लगा। हर समय उसे अपने मित्र हंस की याद आती थी। हंस के बिना उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह भी हमेशा उदास रहता था।

एक दिन की बात है। उधर से लक्ष्मण और भीमा नामक दो व्यक्ति गुजरे। लक्ष्मण और भीमा बड़े नेक ईमानदार और न्यायप्रिय पंच थे। आसपास कहीं भी कोई झगड़ा, विवाद होता था तो लोग न्याय के लिए लक्ष्मण और भीमा के पास ही आते थे।

सागर की ओर देखते हुए लक्ष्मण ने भीमा से कहा– देखो यह सागर है।

भीमा लक्ष्मण की बात काटते हुए बोला– नहीं, लक्ष्मण! यह सागर नहीं है। यह कोई ताल-तलैया है। अगर यह सागर होता तो इसके किनारे हंस अवश्य रहते।

सागर चुपचाप उन दोनों की बातें सुन रहा था। उसे बड़ा दु:ख हुआ। उसने कहा– पंचों! मैं सागर

ही हूँ। मेरे किनारे हंस भी रहते थे लेकिन मेरी मूर्खता के कारण हम मित्रों में झगड़ा हो गया और हंस दूसरे स्थान पर चले गये। मैं अपने व्यवहार पर बहुत दु:खी हूँ। अगर तुम्हें कहीं हंस मिलें तो उनसे कहना कि तुम्हारा मित्र सागर अपने दुर्व्यवहार पर बहुत पछता रहा है। उसे तुमसे बिछुड़ जाने का बहुत दुख है। क्या तुम फिर से सागर के किनारे रहने आ सकते हो?

सागर की व्यथा सुनकर लक्ष्मण ने उसे आश्वासन दिया और कहा– प्रिय सागर! तुम उदास न हो। अगर हमें हंस मिलेंगे तो हम अवश्य ही तुम्हारा संदेश उन्हें दे देंगे। इतना ही नहीं, हम तुम दोनों में मेल कराने का भी प्रयास करेंगे। ऐसा कहकर लक्ष्मण और भीमा आगे बढ़ गये।

कुछ दूर चलने के बाद भीमा की दृष्टि हंसों पर पड़ी। वह बोला– देखो लक्ष्मण! ये हंस हैं।

लक्ष्मण ने कहा– नहीं भीमा! ये हंस नहीं हैं। ये तो सारस या बगुले हैं। अगर हंस होते तो सागर के किनारे रहते। हंस सदैव सागर के किनारे ही रहते हैं।

लक्ष्मण की बात हंस के हृदय में चुभ गयी। उसने कातर दृष्टि से लक्ष्मण व भीमा की ओर देखा और उदास स्वर में बोला– देखो पंचों! हम हंस ही हैं। हम पहले सागर के किनारे ही रहते थे लेकिन थोड़ी-सी बात पर हमारा सागर से झगड़ा हो गया और हम अलग होकर यहाँ रहने लगे। हम यहाँ बहुत दु:खी हैं। हमें अपने मित्र सागर की बहुत याद आती है। जरा-सी बात पर दो मित्र एक-दूसरे से अलग जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम अपने व्यवहार पर बहुत पछता रहे हैं। क्या तुम फिर से हमारी मित्रता सागर से करवा सकते हो? हम जीवन भर तुम्हारा उपकार मानेंगे। कहते हुए हंस की आँखों में आंसू आ गये। पास खड़ी हंसनी की आँखों में भी आंसू थे।

भीमा ने हंसों को सांत्वना दी और बोला– मित्र! तुम दुखी न हो। हम सागर से अवश्य तुम्हारी मित्रता फिर से करवा देंगे।

लक्ष्मण और भीमा समझ गये कि हंस और सागर बहुत अच्छे मित्र हैं और एक-दूसरे से अलग होकर बहुत दुखी हैं। दोनों को अपनी भूल का पछतावा है। अब वे साथ-साथ रहना चाहते हैं। उन्होंने आपस में कुछ परामर्श किया और हंसों को साथ लेकर सागर के पास पहुँचे।

भीमा ने हंसों का दुख सागर को तथा सागर का दुख हंसों को सुनाया। एक-दूसरे का दुख सुनकर दोनों मित्र भावविह्वल हो उठे। दुख और प्रेम से उनकी आंखें भर आयीं और वे एक-दूसरे से लिपट गये। ''लक्ष्मण और भीमा, मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ।'' हंस सागर से अलग होते हुए बोला।

''हाँ पंचों! मैं भी तुम दोनों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। तुम्हारे प्रयासों से ही हम दोनों मित्रों का पुनर्मिलन हुआ है।''

लक्ष्मण और भीमा का आभार प्रकट करते हुए सागर ने कहा।

''मित्रों! अब भविष्य में कभी भी आपस में झगड़ा मत करना। आपस में लड़ने से दुख तो होता ही है। इसके साथ ही साथ समाज में मान-सम्मान कम हो जाता है।'' लक्ष्मण मुस्कुराते हुए बोला।

''हाँ मित्रों! लक्ष्मण ठीक कह रहा है। तुम दोनों झगड़ा करके अलग-अलग हो जाने के कारण ही सागर को ताल-तलैया और हंसों को सारस-बगुला समझा गया।'' भीमा ने समझाया।

''पंचों! हम दोनों ही अपने-अपने व्यवहार पर शर्मिन्दा हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि अब हम आपस में कभी भी झगड़ा नहीं करेंगे।'' सागर पश्चाताप करता हुआ बोला।

''हाँ पंचों! हम लोग कभी भी आपस में झगड़ा नहीं करेंगे बल्कि आपस में झगड़ा करने वालों को तुम लोगों की तरह समझाने का प्रयास करेंगे और उनका मेल कराने का कार्य करेंगे।'' हंस भी सागर का समर्थन करते हुए बोला।

''अच्छा मित्रों! विदा। आपस में प्रेम से रहना, कभी घमण्ड मत करना, कभी झगड़ा नहीं करना।'' कहते हुए लक्ष्मण और भीमा आगे बढ़ गये।

क्या आप जानते हैं?

★ पानीपत को बुनकरो का शहर कहा जाता है।
★ नासिक (महाराष्ट्र) गोदावरी नदी पर स्थित है।
★ वायुयान का परिचालन समताप मण्डल में होता है।
★ गिद्धा पंजाब का नृत्य है।
★ योजना आयोग, मंत्रिपरिषद का अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है।
★ Top-7 कृत्रिम प्रोटीन का नाम है।
★ हीरा पूर्ण आंतरिक परिवर्तन के कारण चमकता है।

प्रस्तुति : अर्जुन कुमार महतो

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन

– अजय कालड़ा

एक गाँव में लक्ष्मण नाम का एक व्यक्ति था। वह चाय बनाता था। था। उसकी दुकान गाँव के चौपाल पर थी। उसकी दुकान स्वादिष्ट चाय के लिए बहुत प्रसिद्ध थी।

भईया, एक चाय देना, कितने रुपये हुए?
चाय
20
20
20 रुपये।
एक दिन लक्ष्मण पास ही के शहर में दुकान का सामान लेने गया। लक्ष्मण सारा सामान लेकर अपने गाँव की तरफ़ आ रहा था कि उसने एक बड़ी चाय की दुकान देखी।
20
वह चाय के दाम सुनकर हैरान था और सोचने लगा। मैं तो 10 रुपये की चाय बेचता हूँ और वहाँ शहर में 20 रुपये की चाय मिलती है जिसका कोई स्वाद ही नहीं था। अब मैं समझा लोग अमीर कैसे होते हैं। मैं भी अपनी चाय का दाम बढ़ा दूँगा।
अरे! चाय के दाम इतने कैसे बढ़ गए। ऐसा क्या हो गया भाई।
महँगाई बहुत हो गई है। इतने में अब गुज़ारा नहीं होता।
20

अब लक्ष्मण की कमाई ज्यादा होने लगी।
पैसे तो अच्छे आ रहे हैं। क्यों ना मुनाफा और बढ़ाया जाए।
20
20
हाँ, अब ठीक है। अब मुझे और अधिक मुनाफा होगा।
अगले दिन से लक्ष्मण ने गाय के दूध में पानी मिलाना शुरू कर दिया।
लक्ष्मण भाई, आज चाय का स्वाद कुछ अलग-सा लग रहा है।
हाँ भाई! चाय का स्वाद तो कुछ अलग ही है।

शिक्षा : लालच हमेशा नुकसानदायक होता है। ऐसी आदतों को हमें अपनाना नहीं चाहिए।

वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर ऑफ द ईयर : ऐश्वर्या यह अवॉर्ड जीतने वाली देश की पहली लड़की

ऐश्वर्या श्रीधर नवी मुंबई में रहती हैं। वे वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर के अलावा वाइल्ड लाइफ प्रजेंटेटर और डॉक्यूमेंट्री फिल्ममेकर भी हैं। 23 साल की ऐश्वर्या को 2020 वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर ऑफ द ईयर अवॉर्ड दिया गया है। वह यह पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय लड़की हैं।

'लाइट्स ऑफ पैशन' टाइटल वाली उनकी फोटो ने दुनियाभर के 80 से अधिक देशों की 50,000 एंट्रीज में पहली पोजिशन हासिल की। ऐश्वर्या ने बिहेवियर इनवर्टेब्रेट्स कैटेगरी में यह पुरस्कार जीता।

ऐश्वर्या को इससे पहले एशिया यंग नेचरलिस्ट अवॉर्ड और इंटरनेशनल कैमरा फेयर अवॉर्ड भी मिला है। वो यह सम्मान पाने वाली सबसे कम उम्र की लड़की हैं। *www.bhaskar.com*

60 करोड़ साल पहले वैश्विक हिमयुग ने बदल दी थी पृथ्वी की तस्वीर

मेलबर्न (भाषा)। जीवन की उत्पत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले एक नये अध्ययन में दावा किया गया है कि करीब 60 करोड़ साल पहले वैश्विक हिमयुग ने धरती के स्वरूप को आश्चर्यजनक तरीके से बदल दिया था। पत्रिका टेरा नोवा में प्रकाशित शोध में इस बात का अध्ययन किया गया है कि पृथ्वी के हिमाच्छादित होने (स्नोवॉल अर्थ) के बाद लाखों सालों के अंतराल में विशेष कार्बनयुक्त अवसादी शैलों का निर्माण कैसे हुआ। अनुसंधानकर्ताओं के मत अनुसार जिस तरह आज ऊष्णकटिबंधी समुद्रों में चूना पत्थर पाये जाते हैं उसी तरह धरती से निकली मिट्टी और रेत से समुद्रों में अवसादी शैल बन गये। अनुसंधानकर्ता एडम नॉड्र्सवान के अनुसार– पहले सोचा जाता था कि 10 हजार साल से भी कम समय के अंतर में ये विशेष कार्बनयुक्त चट्टानें जमा हुई होंगी। जब पूरी पृथ्वी पर फैली बर्फ की चादर पिघलने की वजह से समुद्र का स्तर बढ़ गया था। लेकिन हमने देखा कि वे समुद्र स्तर बढ़ने के बाद हजारों लाखों सालों में जमा हुए हो सकते हैं।

कविता : गफूर 'स्नेही'

बसंत आया

फूलों की सुन्दर सेना,
ले के बसंत आया है ना।
महक की उड़ी ध्वजाएं,
नज़र भले ही न आए।।

खेत मेड़ हैं सजीले,
फूल खिले पत्थर टीले।
भौरों के गान सुरीले,
तितली के पंख रंगीले।।

सबके हर्षित तन मन,
साथ में नाचता फागन।
रंग लगाता प्यार से,
सूखे-गीले हर प्रकार से।।

हर तरफ खुशियां बिखरी,
धूप छांव दोनों निखरी।
सबसे सुहाना ये मौसम,
सर्दी गरमी दोनों कम।।

बाल कविता: सुमेश निषाद

आ गया बसंत

नाच रहे मस्ती में झूम उठा गाँव।
सुर और लय में उठता हर पाँव।
मदमाती आ गयी बसंत की बहार,
खिल उठे कचनार भली लगे छांव।

खिली खिली कलियां मदमाते फूल।
हो लिए गुलाबों के साथ साथ शूल।
आ गया बसंत लिए प्रेम की पुरवाई,
आमों में बौर लगे महके बनफूल।

छाई उमंग मन में खुशहाल जीवन।
मौसमी बयार में है निखर उठा तन।
ओढ़ ली है धरती ने सरसों की चादर,
धानी हुई धरा देख खिल उठा मन।

कहानी : राजकुमार जैन

चार रास्ते

मत्स्य देश का राजा योग्य और दयालु था। उसका पुत्र भी वैसा ही था। राजकुमार के चार मित्र थे। ये पाँचों रोज अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो, घूमने निकल जाते थे। राजधानी से कुछ दूर एक झील थी। वहाँ चार रास्ते, चार दिशाओं में जाते थे। राजकुमार अपने मित्रों के साथ झील तक जाता फिर राजधानी लौट आता।

प्रतिदिन की तरह एक दिन पाँचों मित्र झील तक पहुँचे तो राजकुमार बोला– हम लोग यहाँ आकर ही लौट जाते हैं। कभी इन रास्तों पर जाकर भी देखना चाहिए।

राजकुमार के विचार से चारों मित्र सहमत हो गए। एक मित्र ने राजकुमार से कहा– हम चारों मित्र अलग-अलग दिशाओं में जाते हैं। आप यहीं ठहरकर हमारी प्रतीक्षा करें।

राजकुमार ने बात मान ली। चारों मित्र अलग-अलग दिशाओं में चले गए। दिन ढलने लगा।

सांझ घिर आई। मगर राजकुमार का कोई भी मित्र लौटकर नहीं आया। अंधेरा होने लगा तो राजकुमार अकेला ही राजधानी लौट आया।

राजकुमार रातभर मित्रों की चिन्ता में डूबा रहा। सवेरे उसने मित्रों का पता लगवाया। मगर कुछ पता न चला। राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ उसी चौराहे पर जा पहुँचा जहाँ प्रतिदिन जाया करता था। वहीं इन्तजार करता रहा। शाम हो गई। मित्र नहीं आये। राजकुमार निराश होकर लौट आया।

इस प्रकार एक माह बीत गया। राजकुमार के मित्र नहीं लौटे। आखिर एक दिन घोड़े पर सवार हो, उन चार दिशाओं में से एक दिशा में राजकुमार स्वयं ही बढ़ चला। चलते-चलते काफी दूर निकल गया। एकाएक उसके कानों में किसी के कराहने की आवाज़ आई। एक बूढ़ा व्यक्ति जमीन पर पड़ा था। राजकुमार उसके पास गया। बूढ़े व्यक्ति के शरीर पर घाव थे। वह बेहोश-सा पानी मांग रहा था। राजकुमार पास की एक झील से पानी लाया। बूढ़े व्यक्ति को पानी पिलाया। पानी पीकर बूढ़ा व्यक्ति उठ बैठा।

राजकुमार बोला– बाबा, आप मेरे साथ चलिए, मैं आपका इलाज करवाऊंगा।

अचानक राजकुमार को अपने मित्रों की याद आई और बोला– बाबा यह रास्ता किधर जाता है?

बूढ़ा व्यक्ति बोला– बेटा, मैं अंधा हूँ। देख नहीं सकता, यह रास्ता किधर जाता है? इतना जरूर जानता हूँ कि तुम अपने चारों मित्रों की तलाश में सही रास्ते पर ही जा रहे हो।

यह सुनकर राजकुमार चौंक पड़ा और बोला– आपको कैसे पता?

यह बाद में बताऊंगा। पहले अपने मित्रों की कहानी सुनो। जिनकी खोज में तुम जा रहे हो। तुम्हारा

एक मित्र पूरब दिशा में गया। उसे रास्ते में सोने के सिक्के पड़े मिले। वह उन्हें उठाता गया और आगे बढ़ता गया। वह अभी भी सोने के सिक्कों की तलाश में भटक रहा है।

–और दूसरा मित्र– राजकुमार ने पूछा।

–उसने एक हिरणी और उसके बच्चे को देखा। हिरणी अपने बच्चे को प्यार कर रही थी। उसने बच्चे को तीर से मार दिया। हिरणी के शाप से वह पत्थर का बुत बन गया।

बूढ़ा व्यक्ति फिर बताने लगा– तुम्हारा तीसरा मित्र चलते-चलते एक गाँव में पहुँचा। डाकू गाँव को लूट रहे थे। गाँववालों ने उससे मदद मांगी लेकिन उसने गाँववालों की सहायता नहीं की। उल्टा डाकुओं के साथ मिलकर आज भी लूटमार कर रहा है।

चौथे मित्र के बारे में पूछने पर बूढ़ा व्यक्ति बोला– तुम्हारे चौथे मित्र को मेरे जैसा एक बूढ़ा व्यक्ति मिला। वह बहुत बीमार था। पानी मांग रहा था लेकिन बूढ़े व्यक्ति को पानी न देकर, वह आगे बढ़ गया। अब वह एक घने जंगल में रास्ता भटक गया है व इधर-उधर घूम रहा है।

लेकिन आप यह सब कैसे जानते हो?– राजकुमार ने हैरान होकर पूछा।

–राजकुमार मैं न तो अंधा हूँ और न ही घायल। मेरी ओर देखो।

राजकुमार ने देखा, उसके सामने एक स्वस्थ युवक खड़ा है।

वह बोला– मैं एक जादूगर हूँ। मैं यहाँ रहकर योग्य आदमी की तलाश में था जिसे मैं अपनी कला सिखा सकूं। मेरी कसौटी पर केवल तुम ही खरे उतरे हो।

–लेकिन मैंने ऐसा क्या किया है?

–बहुत मामूली काम लेकिन जिसे अक्सर लोग नहीं करते। तुम चाहते तो मुझे छोड़कर अपनी राह जा सकते थे। फिर भी तुमने ऐसा नहीं किया। इसलिए तुम मेरी विद्या को सीखने के योग्य हो। इस विद्या की सहायता से तुम अपने मित्रों को वापस ला सकते हो।

यह कहकर जादूगर ने उसे अपनी विद्या सिखा दी। जब राजकुमार उन विद्याओं में पारंगत हो गया तो जादूगर गायब हो गया। राजकुमार ने उसके बाद अपने चारों मित्रों को वापस पा लिया।

–कहानी की सत्यता तो जो भी रही होगी परन्तु यह सत्य है कि जिसके मन में दूसरों की सहायता करने की तत्परता रहती है व दिल का सुन्दर होता है उसे सभी लोग स्वयं ही सब कुछ देने को तैयार रहते हैं।

प्रस्तुति : रूपनारायण काबरा

छोटी-सी बात

सामान्य छोटी-छोटी बातों में भी महान संभावनायें छिपी रहती हैं। जिस प्रकार कि एक नन्हें से बीज में एक विशाल वृक्ष छिपा होता है बल्कि यह कहना भी गलत नहीं होगा कि एक ही बीज में जंगल छिपा होता है क्योंकि एक बीज से उत्पन्न एक पेड़ में अनेकों फल होते हैं और हर फल में अनेकों नन्हें बीज जो अपने अन्दर एक विशाल वृक्ष की संभावना लिये होते हैं। इसी बात को चीनी दार्शनिक लाओत्से ने इस प्रकार कहा है– ''हजारों मील का सफर एक कदम से ही तो प्रारंभ होता है।''

★ सेब का गिरना एक सामान्य सी बात है पर इसी सामान्य घटना ने न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त प्रतिपादित करने को प्रेरित किया।

★ डेगची में उबलते पानी पर रखे हिलते-उछलते ढ़क्कन को देखकर जेम्स वाट को स्टीम इंजन का विचार आ गया।

★ एक गीली कमीज जो रस्सी पर सूखने हेतु लटक रही थी जब वह हवा से फूल गई तो इस सामान्य बात ने गुब्बारे का आविष्कार करा दिया।

★ बगीचे की दीवार के दो कोनों को मकड़ी के बुने जाले से जुड़ा देखकर ''सस्पेंशन ब्रिज'' अर्थात् झूलते पुल का विचार आ गया।

★ हवा से हिलती-झूलती लालटेन को देखकर पेंडुलम का विचार आ गया और इसी से समय की गणना का आविष्कार अर्थात् घड़ी बनाना संभव हो सका।

यह सत्य है कि छोटा या सामान्य कुछ नहीं है। मनुष्य का चिन्तन दर्शन जब भी जिस छोटी सी बात से सक्रिय, सजग और सचेष्ट हो उठे वही सामान्य असामान्य का वाहक एवं सूत्रधार बन जाता है। बात कोई छोटी नहीं होती है।

कविता : डॉ. सेवा नन्दवाल

पुष्प

ये रंग-बिरंगे पुष्प नहीं,
पेड़ों की प्यारी संतान हैं।
धरती माँ को शृंगारित करने,
प्रकृति के वरदान हैं।।

अजब-गजब सी खुशबू,
अहा कितनी मदमस्त है।
जिसे देखकर रुदन की,
हिम्मत होती पस्त है।।

काश फूल के मानिंद,
सबके दिल बन जाते।
यही होता स्वर्ग,
हरद

बाल कविता : राधेलाल 'नवचक्र'

ऋतु

ऋतुओं का है देश हमारा,
छह ऋतुएं हैं यहाँ।

है वसंत ऋतुओं का राजा,
रानी वर्षा ऋतु यहाँ।

बोल श्रेयसी और कौन सी,
चार ऋतुएं हैं यहाँ?

ग्रीष्म, शरद, शिशिर, हेमंत,
मिला जवाब है यहाँ।

बोध कथा : ईलू रानी

खाली हाथ

बीहड़ वन के बीच में आचार्य चरक का विशाल आश्रम था। उनके आश्रम में दूर-दूर से शिष्य विद्या ग्रहण करने आते थे। आचार्य हर पूनम की चांदनी में अपने शिष्यों के संग वन का नजारा देखने को निकलते। आचार्य विभिन्न वनस्पतियों के संदर्भ में जानकारी प्रदान किया करते।

आचार्य का कथन था– जंगल गुणों का सागर है, यदि मनुष्य इसे नष्ट न करे तो यह मनुष्य के लिए बड़ा उपयोगी है व एक सच्चा दोस्त भी है।

हाँ, आचार्य के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने वाले शिष्य अच्छे वैद्य, हकीम बना करते। जिनकी दुनिया के कोने-कोने में बड़ी इज्जत की जाती थी।

हालांकि आश्रम में सैंकड़ों की संख्या में छात्र थे। लेकिन हर बरस एक या दो शिष्य ही परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ करते।

हर वर्ष की भांति आचार्य चरक ने अपने शिष्यों की परीक्षा ली और बोले– इस विशाल जंगल की सूक्ष्म निगाहों से खोज करो। जो वनस्पति जंगल की छाती पर बेकार खड़ी हो उसे तुरन्त उखाड़ लाओ।

आश्रम में कई किस्म के शिष्य थे। उनमें कई आलसी भी थे। जो शिष्य ज्यादा आलसी थे। उन्होंने मेहनत करने की नहीं सोची और जल्दी से पास की ही वनस्पतियां उखाड़कर उनकी गट्ठरी बांध ली और आचार्य के समक्ष पेश कर दी।

कुछ शिष्यों ने एक हफ्ते बाद सूखी लकड़ियों के ढेर लाकर आचार्य के कदमों रख दिये।

कुछ शिष्य जहरीले पेड़-पौधों को उखाड़

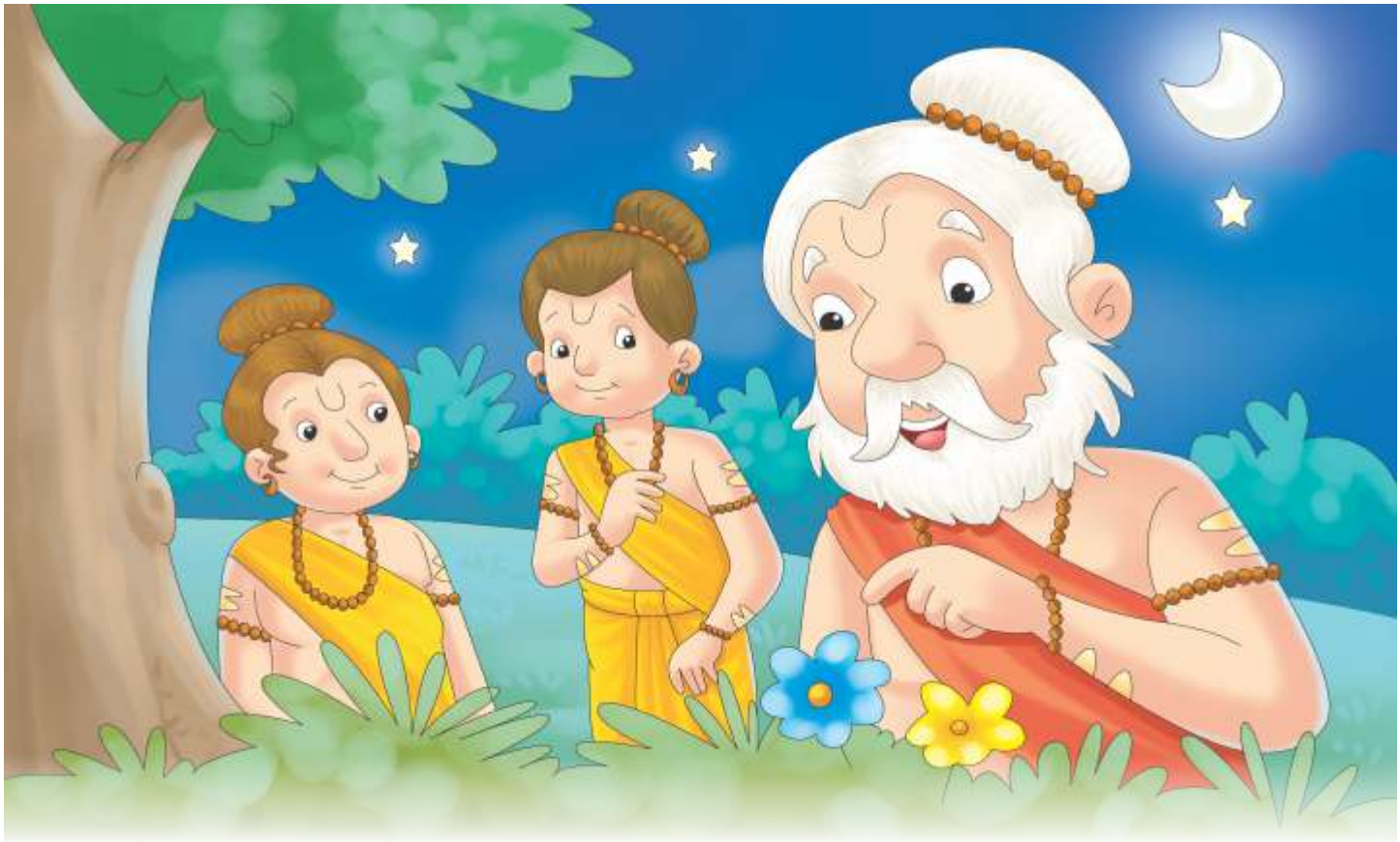

लाये और बोले– इनसे हर वर्ष कई पशु बेवजह मौत का शिकार होते हैं।

जो शिष्य ज्यादा चालक और चतुर थे उन्होंने खोज करने में अपना कुछ समय लगाया और चार-पाँच वनस्पतियां अपने-अपने थैलों में लाकर बोले– इनका कोई उपयोग नहीं है।

लेकिन गुरु जी किसी भी शिष्य से सन्तुष्ट न हुए। परीक्षा का समय पूरे तीस दिन का था। सभी शिष्य अपने-अपने उत्तर लेकर लौट आये थे। लेकिन एक शिष्य ठीक तीसवें दिन आचार्य की सेवा में हाजिर होकर बोला– मैं खाली हाथ ही लौटकर आया हूँ।

यह सुनकर आचार्य ने पूछा– तुम्हें इतने बड़े जंगल में ऐसी कोई वनस्पति नहीं मिली, जो औषध न हो।

इस पर अन्य शिष्य खिलखिलाकर हँसने लगे और एक दूजे से चर्चा करने लगे– 'पूरे तीस दिन बरबाद कर दिये और फिर भी खाली हाथ।'

अभी सभी शिष्य हँस ही रहे थे। तभी आचार्य ने उन्हें शांत करते हुए उस शिष्य से पूछा– भला, तुम खाली हाथ क्यों लौट आये?

शिष्य बोला– मैंने सारा जंगल छान मारा। मुझे एक भी वनस्पति, ऐसी नहीं दिखी जो आयुर्वेद में काम न आती हो।

शिष्य के मुख से ऐसा जवाब सुनकर आचार्य बोले– प्रिय शिष्य! इस वर्ष की परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हुए। हाँ, इस दुनिया में सचमुच ऐसी कोई वनस्पति नहीं जो औषध न हो।

यह सुनकर अन्य हँसते हुए शिष्य अब अपनी मूर्खता पर पछताने लगे।

विशेष लेख :
कमल सोगानी

शत्रु को चकमा देने में माहिर होते हैं हंस

सफेद हंस से तो आप परिचित होंगे ही, लेकिन आपको जानकर अचरज होगा कि ऑस्ट्रेलिया की तटवर्ती झीलों में अनोखे हंस पाये जाते हैं जिनका वर्ण काला होता है।

ऑस्ट्रेलिया में काले हंस को 'कोट ऑफ आर्म्स' का प्रतीक माना जाता है। उत्तरी गोलार्द्ध में पाये जाने वाले सफेद हंसों की तरह काले हंस भी अच्छे तैराक हैं और छोटे-छोटे द्वीपों की घनी घास में अपने अंडे देते हैं। इनका घोंसला टहनी और तिनकों के ढेर में बना एक खोखला-सा होता है। जिसमें वे अंडों को रखते हैं। अगस्त और दिसम्बर के मध्य में वे इन अंडों को सेते हैं। इन दिनों वहाँ बसन्त ऋतु का मौसम होता है। अंडे से निकला चूजा स्लेटी रंग का होता है और उसके शरीर पर कोमल पंख होते हैं। ये कुछ ही घंटों में तैरना सीख जाते हैं। अपनी माँ की चोंच में दबे कीड़ों पर चूजे टूट पड़ते हैं। जब माँ प्रकृति की हसीन वादियों में सैर करने के लिए निकलती है तो चूजे भी बाहर की दुनिया देखने के लिए उसकी पीठ पर सवार हो जाते हैं।

काले हंस अक्सर समूह में रहते हैं। पानी की सतह पर तैरते हुए कई तरह की कलाबाजियां प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में उनकी कलापूर्ण किलकारियां मन को छू जाती हैं।

इनका मुख्य भोजन पानी के जीव हैं। इसके अतिरिक्त ये शैवाल, जंगली फल, फूलों का रस भी अपने भोजन में शामिल करते हैं।

ये तैराकी के वक्त कई तरह की छोटी-छोटी

उड़ान भरते हैं। पानी में गोता लगाते हैं। कभी-कभी सिर्फ गर्दन ही पानी के बाहर दिखाते हैं व धड़ पानी में छिपा लेते हैं। शत्रु पीछे लगने पर ये तैराकी करते-करते उड़ने लगते हैं और ऐसी जगह जा छिपते हैं जहाँ घने पेड़ों की काली-काली शाखाएं होती हैं। ऐसे में कोई शत्रु इन्हें पहचान नहीं पाता। यूं ये शत्रु को चकमा देने में बड़े माहिर होते हैं।

ये मौसम के ज्ञाता भी होते हैं। आने वाली प्राकृतिक आपदाओं को ये पूर्व में ही भांप लेते हैं और अपने समूह में गुपचुप चर्चा करके शान्त वातावरण की ओर उड़ान भर लेते हैं।

हंस का जोड़ा जीवन भर हँसी-खुशी रहता है। अपना साथी बिछुड़ने पर यह फिर नया साथी नहीं बनाता। बल्कि उसी के गम और यादों में अपने जीवन का सफर व्यतीत कर लेता है।

ये हंस एकता के प्रतीक भी हैं। किसी भी हंस पर हमला होने पर अन्य हंस तुरन्त पहुँचकर उसे यथासम्भव बचाने का भरपूर प्रयास करते हैं।

17वीं शताब्दी तक काले हंस की कुछ प्रजातियां हिमाचल की नम वादियों में भी दिखाई देती थीं लेकिन उसके बाद ये अचानक लुप्त हो गई और ऑस्ट्रेलिया में दिखाई देने लगीं।

कविता : मु. जलालुद्दीन खान

तितली

फूलों पर मंडरा रही तितली,
खुशी के गीत गा रही तितली।

पंख रंगीन अपने फैलाकर,
रंग कुदरत के दिखा रही तितली।

देखकर खूब खुश होते हैं सब,
देखिए सबको लुभा रही तितली।

पंखुड़ियों पर बैठकर रस चूसती,
फूल की शोभा बढ़ा रही तितली।

और भी सुन्दर दिख रही है ये,
पंख अपने जब फैला रही तितली।

फूलों के मुखड़े पर मुस्कुराहट,
अपनी मौजदूगी से ला रही तितली।

रोचक जानकारी : ऋषिमोहन श्रीवास्तव

चींटीखोर : जिसे चींटियां खाना पसन्द है

चींटीखोर नाम का यह जीव चींटियों को बड़े चाव से खाता है। इसे 'एकिडना' भी कहते हैं। यह अपनी लम्बी थुथननुमा चोंच चींटियों के बिल में डालकर उन्हें निकाल लेता है। चींटियां इस जीव से बचना चाहती हैं किन्तु बच नहीं पातीं। विशेषकर जंगली चींटियों के लिए इससे ज्यादा खतरा बना रहता है।

चींटीखोर की जीभ पर बहुत ही चिपचिपा पदार्थ लगा रहता है जिससे तुरन्त ही चींटियां उससे चिपक जाती हैं।

आमतौर पर चींटीखोर की त्वचा नुकीले कांटों से ढकी रहती है। इसके ठीक नीचे साधारण बालों की एक परत होती है। शरीर का अगला भाग लम्बा और शुंडाकार होता है। पैरों में पांच-पांच उंगलियां पाई जाती हैं तथा एड़ी पर एक छोटा-सा कट होता है जो एक विशेष ग्रंथि से जुड़ा रहता है।

एक विचित्र बात चींटीखोर में होती है। इसकी आंखें बहुत छोटी होती हैं। कान होते जरूर हैं किन्तु उन कानों से यह सुन नहीं पाता। सुनने की क्षमता इसके अंत:कर्णों में पाई जाती है। चींटीखोर के पैरों के नाखून बहुत मजबूत और नुकीले होते हैं। इनकी मदद से ही चींटीखोर चींटियों के टीले और दीमक के घोंसले फोड़ने में कामयाब होते हैं।

आमतौर पर चींटीखोर रात्रि के समय अपनी मांद से बाहर निकलता है। यह जीव मुख्यत: ऑस्ट्रेलिया, गुआना, तस्मानिया में विशेष रूप से पाया जाता है।

प्रेरक-प्रसंग : अर्चना सोगानी

इन्सानियत का प्रेम

स्वामी विवेकानंद को हर वर्ग के लोगों से बड़ा असीम प्रेम था। वे छोटे-बड़े सभी को ज्ञान का उपदेश दिया करते। उनका कथन था– ''जीवन में कभी क्रोध मत करो, प्रेम से लोगों का दिल जीतो। मानव सेवा ही सबसे बड़ी सेवा है जो मानव जितना सच्चा, खरा होता है, वह जग में उतना ही पूजा जाता है।''

वैसे विवेकानंद जी अपने बचपन के दिनों से ही बड़े महान थे। उनके दिल में इन्सानियत की सच्ची सेवा के गुण छिपे थे। वे दोस्त हो या दुश्मन; समय देखकर सबकी खुले दिल से मदद किया करते। उनके जीवन की सेवाभाव से जुड़ी एक ऐसी ही घटना यहाँ प्रस्तुत है।

अपनी किशोरावस्था के दिनों स्वामी विवेकानंद व्यायाम के प्रति काफी रुचि रखते थे। वे प्रतिदिन व्यायामशाला जाया करते थे और तरह-तरह की कसरतें कर शरीर को सबल बनाते थे।

एक दिन वे अपने दोस्तों के संग व्यायामशाला गये और वहाँ अपने गुरु के कहने पर एक स्थान पर बड़ी तेजी के साथ झूला झूलने लगे। तभी एक अंग्रेज ने उनसे और उनके मित्रों से किसी बात पर विवाद शुरू कर दिया। अभी विवाद चल ही रहा था कि अचानक व्यायामशाला का एक खम्भा उस अंग्रेज के सिर पर धम्म से गिर पड़ा। इससे उसका सिर फट गया और तेजी से खून बहने लगा। दर्द के मारे वह अंग्रेज छटपटाने लगा। यह देखकर उनके दोस्त तो डरकर चुपचाप अपने-अपने घर चले गये। लेकिन स्वामी विवेकानंद से उसकी तड़प देखी न गई। उसका चेहरा देखकर उनकी आँखों में करुणा के आंसू भर आये। उन्होंने तत्काल विवाद भुला दिया और निर्भीकता व स्नेह से अपनी कमीज फाड़कर उसके सिर पर पट्टी बांध दी। फिर उसकी बगल में बैठकर हाथों से पंखा करने लगे।

कुछ देर बाद अंग्रेज को होश आया तो अपने बगल में बैठे स्वामी विवेकानंद को देखकर दंग रह गया उसने तुरन्त आंसू बहाते हुए उनसे क्षमायाचना की।

स्वामी जी मंद-मंद मुस्कुराते हुए उसे क्षमा करते हुए कहा– ''जीवन के सफर में याद रखना इन्सानियत से बढ़कर कोई धर्म नहीं।'' यदि शत्रु भी विपत्ति में हो तो शत्रुता भुलाकर उसकी मदद करना ही अति महानता है।

बस, उसी दिन से वह अंग्रेज स्वामी विवेकानंद का सच्चा मित्र बन गया।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

दोस्ती का मतलब

दीपू दस वर्ष का था। उसके पापा उसे भांति-भांति का खेलने का सामान लाकर देते रहते थे। उसकी खेलों में रुचि थी। उसके पास फुटबॉल, बैट-बल्ला, कैरम बोर्ड और साइकिल आदि थे।

दीपू का दोस्त था मनु। वह उससे दो वर्ष बड़ा था। दीपू स्कूल से घर आकर मनु के साथ खेल के मैदान में चला जाता और खेलता रहता। वहाँ उसके अन्य दोस्त भी आ जाते थे। दीपू के घर से खेल का मैदान ज्यादा दूर नहीं था।

मनु का स्वभाव दीपू से कुछ उलट था। वह थोड़ा चालाक था और स्वार्थी भी। दीपू खेलों का सामान अपने घर से ही लाता। यदि कोई खेल का सामान टूट जाता तो मनु उसे नया लाने को कह देता।

दीपू जब मनु और दूसरे दोस्तों के साथ मैदान में खेल रहा होता तो वहाँ नजदीक की बस्ती में रहने वाला एक लड़का भी उन्हें खेलता देखकर प्रसन्न होता रहता। उसका घर भी पास ही था।

एक दिन दीपू दोस्तों के साथ मैदान में खेल रहा था। वह लड़का भी वहाँ आकर बैठ गया और उन्हें क्रिकेट खेलते हुए देखने लगा।

दीपू ने पूछा– ''तुम्हारा नाम क्या है?''

''लाटू।'' वह बोला।

मनु ने तुरन्त व्यंग्य किया, ''लाटू? फिर घूमते क्यों नहीं?''

दीपू ने लाटू से पूछा, ''तुम्हें भी खेलना है हमारे साथ?''

लाटू ने झटपट हाँ में सर हिला दिया। वह खेलने के लिए एकदम खड़ा हुआ तो मनु ने दीपू को तुरन्त संकेत किया। ''नहीं यार, ऐसे लड़के के साथ नहीं खेलेंगे हम। कपड़े तो देखो इसके?''

दीपू को मनु का ऐसा उत्तर अच्छा न लगा।

कुछ दिनों बाद एक घटना घटी। जब सारे दोस्त मैदान में खेलने के लिए आये तो पता नहीं कहाँ से भागता हुआ एक कुत्ता मैदान में घुसा। साथ ही दीपू और उनके साथियों के कानों में ऊँची आवाजें भी पड़ीं। ''अरे बच्चो, भागो जल्दी से। यह कुत्ता हलकाया (पागल) हुआ है। देखना कहीं काट न ले।''

कुत्ते का पीछा करने वाले दो नौजवानों ने हाथों में लाठियां पकड़ी हुई थीं। वह किसी

तरह उस कुत्ते को काबू करना चाहते थे ताकि किसी को काट न ले।

मैदान में खेल रहे बच्चों में अफरा-तफरी मच गई। सभी अपने बचाव के लिए इधर-उधर भागने लगे। इस अफरा-तफरी में दीपू भी तेजी से अपने घर की ओर भागा लेकिन थोड़ी ही दूर जाकर उसे ऐसी ठोकर लगी कि वह जमीन पर बुरी तरह गिर पड़ा। मनु ने भी उसे गिरते हुए देख लिया था परन्तु वह रूका नहीं। वह स्कूल की चारदीवारी से कूदकर अपने घर में जा घुसा था। उसका घर चारदीवारी के पास ही था।

दीपू की बाजुओं और घुटनों पर चोटें आई थीं। एक घुटने से तो खून भी बहने लगा था।

जब कुत्ता दूर निकल गया तो दीपू ने देखा मनु अपने घर की छत पर चढ़कर उसकी तरफ देख रहा था। दीपू लंगड़ाता हुआ चलने लगा।

तभी दीपू ने देखा, कुछ दूरी से लाटू उसकी तरफ दौड़ा आ रहा था। जब उसने दीपू की चोटें देखी तो वह उसे धैर्य देने लगा। पहला घर लाटू का ही था। वह दीपू को अपने घर ले गया। वहाँ उसने अपनी मम्मी को सारी बात बताई। लाटू की मम्मी ने उससे कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। फिर उन्होंने मरहम पट्टी ली और उसके घुटने पर बांध दी। लाटू और उसकी मम्मी के ऐसे व्यवहार ने दीपू का मन जीत लिया।

जब दीपू अपने घर जा रहा था तो उसे मनु आता दिखाई दिया। मनु दीपू के एक घुटने पर बँधी हुई पट्टी देखकर हैरान हुआ। हैरान इसलिए कि आस-पास तो कहीं कोई डिस्पेंसरी या डॉक्टर नहीं था। फिर दीपू किससे पट्टी बंधवाकर आ रहा है।

''अरे दीपू, यह पट्टी कहाँ से बंधवाकर आ रहे हो?'' मनु ने पूछा।

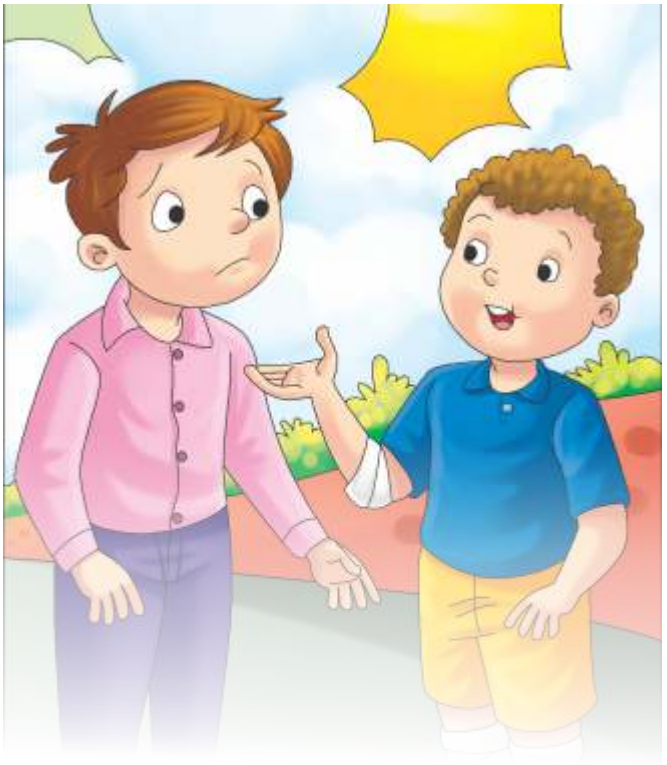

दीपू बोला– ''जब एक दोस्त मुझे मुसीबत में देखकर खुद भाग गया और मुसीबत टलने के बावजूद भी पास नहीं आया तब एक और दोस्त ने मुझे आकर सम्भाला। यह मरहम पट्टी उसी दोस्त और उसकी मम्मी ने की है।''

''और दोस्त? कौन सा दोस्त? कहाँ से आया वह दोस्त?'' मनु ने कई सवाल किये।

''वही दोस्त, जिसे तुम दोस्त मानने से संकोच कर रहे थे। वही गरीब बस्ती वाला ... ।'' दीपू बोला।

अब मनु सब कुछ समझ गया और बोला– ''अच्छा लाटू ने की है तुम्हारी मदद।''

''हाँ मनु, पहले लाटू की मम्मी ने मेरे जख्म धोए और फिर बड़े प्यार से मरहम पट्टी की। मैं उनके स्नेह और सहानुभूति को कभी नहीं भुला सकता।''

दीपू की यह बात सुनकर मनु शर्मिन्दा हो गया। ●

बाल कविता : रावेन्द्र कुमार रवि

उठ जाओ गुड़िया रानी

आई है भोर सुहानी,
उठ जाओ गुड़िया रानी।

फूलों ने हँसी बिखेरी,
कलियों ने कही कहानी–
उठ जाओ गुड़िया रानी।

चिड़िया ने गीत सुनाया,
मीठी पपहिरी बजानी–
उठ जाओ गुड़िया रानी।

सुरमय हो जाए दुनिया,
बोलो कुछ ऐसी बानी–
उठ जाओ गुड़िया रानी।

तुम ही हो सबसे सुन्दर,
तुमको यह बात बतानी–
उठ जाओ गुड़िया रानी।

ऐतिहासिक लेख : रजनी मिश्रा

आओ जानें

कौन थे तात्या टोपे

अठारह सौ सतावन की क्रांति का जब जिक्र आता है तो वीर सेनानी तात्या टोपे का नाम सभी लेते हैं। तात्या टोपे ने अपनी बहादुरी के कारण अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे।

तात्या टोपे का मूल नाम रामचन्द्र पांडुरंग टोपे था। इनका जन्म सन् 1814 में पांडुरंग भट्ट के घर हुआ था। बाजीराव पेशवा से तात्या के पिता के निकट सम्बन्ध थे। अत: बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब तथा तात्या टोपे भी एक-दूसरे के मित्र बन गये। बड़े होने पर जब नाना साहब पेशवा नरेश बने तो तात्या टोपे उनके कार्यालय में काम करने लगे लेकिन कानपुर पर अंग्रेजों का पुन: अधिकार होने पर तात्या ने यह नौकरी छोड़कर युद्ध का मोर्चा सम्भाल लिया। नाना साहब को बिठूर से फतेहपुर भेज वे अंग्रेजों से लड़ते रहे। अपनी संगठन शक्ति से सेना का पुनर्गठन कर उन्होंने अंग्रेजों को बिठूर छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया। अंग्रेज जनरल हैवलाक लखनऊ से अतिरिक्त फौज लेकर कानपुर आ पहुँचा। दोनों में युद्ध हुआ लेकिन तात्या को हारकर गंगा में कूदकर जान बचानी पड़ी। वे वहाँ से फतेहपुर पहुँचे। वहाँ सेना संगठित कर और उसकी कमान नाना को देकर स्वयं कालपी आ गये।

कालपी में तात्या ने पुन: नई सेना का गठन किया और कालपी के किले को अपने अधिकार में ले लिया। तब तक नाना साहब अपनी फौज के साथ वहाँ आ पहुँचे। दोनों ने मिलकर कानपुर पर आक्रमण कर दिया। लेकिन अंग्रेज फौज अधिक होने से यह आक्रमण असफल हुआ। नाना को शाहजहाँपुर तथा तात्या को कालपी में शरण लेनी पड़ी।

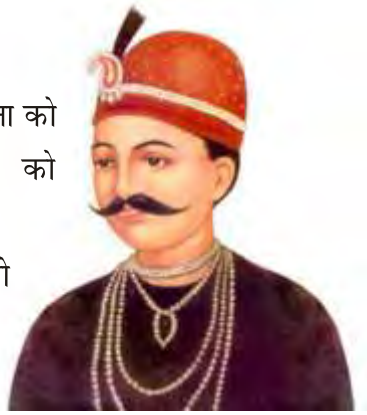

तात्या टोपे सेना को संगठित कर नाना साहब की सहायता करना चाहते थे कि तभी झांसी की रानी ने तात्या से सहायता मांगी। झांसी में सर ह्यू घेरा डाले हुए थे। तात्या ने पीछे से उस पर आक्रमण किया लेकिन वे असफल रहे। इधर गद्दारों ने किले का दक्षिण द्वार खोल दिया। इससे अंग्रेज सेना किले में प्रवेश कर गई। झांसी की रानी ने किले से निकलकर कालपी में तात्या की शरण ली। लेकिन अंग्रेज सेना के सामने तात्या की सेना कमजोर पड़ती देख रानी ने ग्वालियर की राह पकड़ी। अंग्रेजों ने सभी जगह से फौज इकट्ठी कर हमला किया। झांसी की रानी ग्वालियर में नाले के पास शहीद हो गई। तात्या ने तब नागपुर में मोर्चा संभालने की सोची। ग्वालियर छोड़ वे नागपुर पहुँचे। लेकिन वहाँ सहायता न मिली तो वे छापामार युद्ध से अंग्रेजों से लड़ने लगे।

तात्या टोपे को पकड़ने के सभी प्रयास असफल रहने पर अंग्रेजों ने उनके मित्र को अपने साथ मिलाकर तात्या टोपे को सोते समय गिरफ्तार किया। अंग्रेजों की अनेक यातनाओं के बाद फौजी अदालत ने उन्हें फांसी की सजा सुनाई और 18 अप्रैल 1859 को इस महान वीर को फांसी दे दी गई।

अपनी वीरता तथा युद्ध कौशल से अंग्रेजों को नाकों तले चने चबा देने वाले इस महान देश भक्त स्वंतत्रता सेनानी का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया। 1857 की क्रांति ने स्वाधीनता की आग आम जन मन में प्रज्ज्वलित कर दी। ●

प्रेरक-कहानी : नीलम 'ज्योति'

वरदराज का कायाकल्प

बहुत पुरानी बात है। एक गुरुकुल में वरदराज नाम का एक बालक पढ़ता था। उसका मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता था। सभी विद्यार्थी उसका मजाक उड़ाते थे। कोई उसे 'बुद्धू' कहता तो कोई 'मूर्खराज'। कुछ सहपाठी कहते कि जब भगवान बुद्धि बांट रहे थे तब वह सो रहा था। उसे स्वयं भी यही लगता कि वह बुद्धू है, मूर्ख है। इसलिए वह पढ़-लिख नहीं सकता।

गुरु जी उसे बहुत समझाते, लेकिन वरदराज की समझ में कुछ नहीं आता था। एक दिन गुरु जी ने निराश होकर कहा– बेटे वरदाज! पढ़ना-लिखना तुम्हारे बस की बात नहीं। लगता है ईश्वर ने तुम्हारे भाग्य में विद्या लिखी ही नहीं है। इससे तो यही अच्छा है कि तुम अपने गाँव लौट जाओ। वहाँ अपने पिता के काम में हाथ बंटाओ।

गुरु जी की बात सुनकर वरदराज को बड़ा दु:ख हुआ। वह अपने साथियों से विदा लेकर तथा गुरु जी के पांव छूकर घर की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह थक गया। उसे भूख भी सताने लगी। रास्ते में खाने के लिए गुरु जी ने उसे थोड़ा-सा सत्तू दिया था। उसे उस सत्तू की याद आई। उसने अपने थैले से सत्तू निकाला और एक ओर बैठकर उसे खाने लगा। कुछ दूरी पर एक स्त्री कुएं से पानी भर रही थी। वह पानी पीने वहाँ पहुँचा।

उसने स्त्री से पीने के लिए पानी मांगा। जब स्त्री रस्सी से पानी खींच रही थी तो अचानक उसका ध्यान कुएं की जगत पर बने गड्ढों की ओर गया। वह स्त्री से बोला– घड़े रखने के लिए आपने कितने अच्छे गड्ढे बनाएं हैं।

उसकी भोली बातें सुनकर स्त्री ने उसे समझाया कि ये गड्ढे बार-बार घड़ों को रखने से अपने-आप बन गये हैं। किसी ने इन्हें नहीं बनाया है। वरदराज के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने पूछा– क्या सचमुच ही ये गड्ढे अपने-आप बने हैं? क्या मिट्टी के घड़ों में इतनी ताकत है कि वे पत्थर को घिस दें?

स्त्री ने उसे समझाया– हाँ बेटा, यह देखो, कुएं की जगत पर रस्सी ने भी घिस-घिसकर निशान बना दिये हैं।

वरदराज ने मन में सोचा कि 'जब मिट्टी के घड़े और कोमल रस्सी से पत्थर घिस सकता है तो बार-बार अभ्यास करने से क्या मैं विद्या प्राप्त नहीं कर सकता।'

मन में यह बात आते ही उसकी निराशा और दु:ख दूर हो गया। उसने मन में ठान लिया। मैं खूब परिश्रम करूंगा। बार-बार अभ्यास करूंगा।

वह गुरुकुल लौट आया। गुरु जी को प्रणाम करके उसने अपने मन की बात बताई। सारी बात सुनकर गुरु जी प्रसन्न हो उठे। गुरु जी ने उसे पुन: पढ़ाना शुरू किया। वरदराज खूब मन लगाकर पढ़ने लगा। वह अभ्यास के महत्व को समझ चुका था। कुएं की घटना ने उसका कायाकल्प कर दिया था।

बच्चों! बड़ा होकर यह बालक वरदराज ही संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड, विद्वान बने। इनकी ख्याति सारे भारत में फैल गई। इन्होंने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
आर्यमन प्रजापति

मम्मी, कल मेरे सारे दोस्त लंच में अलग-अलग डिश लेकर आएंगे। आप भी कल लंच में फ्राइड राइस बनाकर देना।
ठीक है किट्टी, मैं बना दूँगी।
सच में आज बहुत मज़ा आया।
क्या बात है किट्टी आज तुम बहुत खुश लग रही हो?
हाँ मम्मी, आपने फ्राइड राइस बहुत टेस्टी बनाए थे। मेरे सभी दोस्तों को बहुत पसंद आए। कल आप मेरे लंच में कटलेट देना।

बेटा आज मेरी तबीयत थोड़ी ठीक नहीं है। आज तुम सैंडविच ही ले जाओ।
मुझे नहीं ले जाना टिफ़िन। मैं जा रही हूँ।
किट्टी क्या हुआ? तुम इतने गुस्सें में क्यों हो?
मुझे आज किसी से बात नहीं करनी।
आज किट्टी बहुत गुस्से में है। वो किसी से बात नहीं कर रही।

मैंने मम्मी को कल कटलेट देने को कहा था और उन्होंने सैंडविच दे दिए।
किट्टी क्या हुआ? तुम इतने गुस्से में क्यों हो?
उन्होंने क्यों नहीं बनाए।
उनकी तबीयत ठीक नहीं थी।
किट्टी यह तो तुमने बहुत गलत किया। तुम्हें अपने व्यवहार के लिए आंटी से माफ़ी माँगनी चाहिए।
उनकी तबीयत ठीक नहीं थी फिर भी उन्होनें तुम्हारे लिए लंच बनाकर दिया और तुम उन पर गुस्सा कर रही हो।
कोई बात नहीं बेटा! तुम्हें अपनी गलती का एहसास हुआ मुझे अच्छा लगा।
मम्मी! मुझसे गलती हो गई। प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो। मैंने आपसे गलत तरीके से बात की। सॉरी!

आलेख : किरणबाला

जंगली भैंसा
जिससे शेर भी डरे

जंगल में तरह-तरह के पशु पाए जाते हैं जो सभी शेर से डरते हैं और उसे सामने देख दुम दबाकर भाग जाते हैं। लेकिन जंगली भैंसा एकमात्र ऐसा जीव है जो शेर से सामना होने पर उससे लोहा लेता है और कई बार शेर दुम दबाकर भाग जाता है।

आमतौर पर जंगली भैंसे अफ्रीका के मध्य भाग में पाए जाते हैं। ये अत्यन्त खूंखार होते हैं। जब ये झुंड में होते हैं तो इनकी ताकत बढ़ जाती है और शेर भी सहसा इन पर हमला नहीं करता और यदि करता है तो ये अपने नुकीले सींगों से उसे अच्छा मजा चखाते हैं। ऐसे में शेर या तो गंभीर रूप से घायल होकर मैदान छोड़कर चला जाता है या फिर मौत को प्राप्त होता है। हाँ, कमजोर, बीमार, बूढ़े या अल्पायु के जंगली भैंसे शेर का शिकार अवश्य बन जाते हैं।

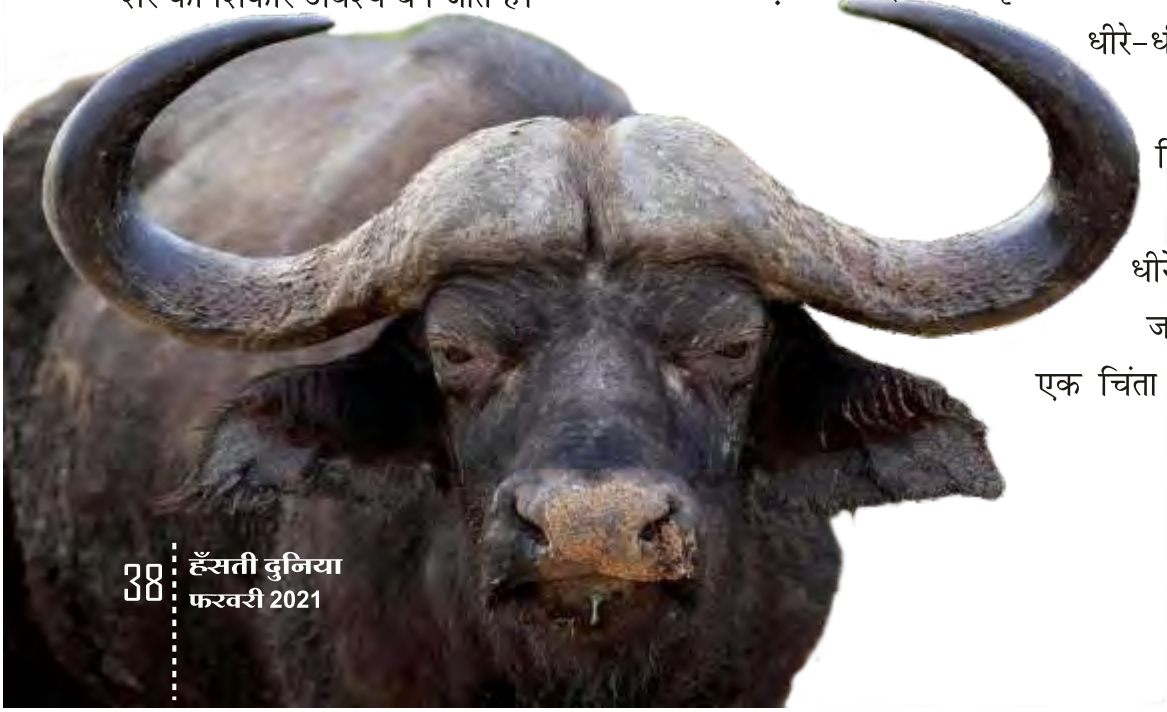

अफ्रीका में पाए जाने वाले जंगली भैंसे आम भैंसों से काफी भिन्न होते हैं। भारत में पाए जाने वाले भैंसे भले ही उनके समान दिखाई देते हो लेकिन ये दोनों अलग-अलग प्रजातियों के जीव हैं जिनका कोई सम्बन्ध नहीं है यहाँ तक कि उनकी आदतें भी भिन्न होती हैं। अफ्रीकी भैंसे आकार में भारतीय भैंसों से अधिक लंबे और भारी होते हैं। वयस्क नर भैंसों का भार एक हजार किलोग्राम तक हो सकता है जबकि मादा का भार 750 किलोग्राम तक हो सकता है। ये डेढ़ से दो मीटर तक ऊँचे हो सकते हैं। इनके सींग ही एक मीटर से अधिक लंबे होते हैं।

जंगली भैंसा विशुद्ध शाकाहारी प्राणी है जो घास चरकर अपना पेट भरते हैं। ये झुंडों में घास चरने जाते हैं ताकि शत्रु का डटकर मुकाबला कर सकें।

यद्यपि जंगली भैंसों के शिकार पर प्रतिबंध है तो भी लोग अवैध रूप से इसका शिकार करते हैं तथा इनके सींगों से अपने ड्राइंग-रूम की शोभा बढ़ाते हैं। इनके प्राकृतिक आवास स्थल भी धीरे-धीरे सिमटते जा रहे हैं। जिससे इनकी संख्या धीरे-धीरे घटती जा रही है जो एक चिंता की बात है।

●●●

कहानी :
बलतेज कोमल

स्वतन्त्रता सभी को प्रिय

समीर बेहद शरारती बच्चा था। शरारती होने के साथ-साथ उसमें एक खराब आदत यह भी थी कि वह बेकसूर पक्षियों को अकारण ही दु:ख देता था। समीर के पापा एक लेखक थे वह पक्षियों से बहुत स्नेह करते थे। उन्होंने पक्षियों के रहन-सहन पर एक पुस्तक भी लिखी थी।

समीर के पापा ने समीर को कई बार समझाया कि देखो समीर बेटा, ''तुम इन पक्षियों को आकरण ही दु:खी न किया करो। इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हाथ धोकर इनके पीछे पड़े रहते हो?''

लेकिन समीर अपने पिता की दी हुई नसीहत पर बिल्कुल अमल न करता। वह अक्सर पक्षियों को फंसाने के नये-नये तरीके सोचता रहता। कई बार वह अपने घर की सभी खिड़कियां व दरवाजे बन्द करके चिड़ियों को पकड़ता और उन्हें अपने पिंजरे में बंदी बनाकर उनका तमाशा देखता रहता। वह कभी उनके आगे रोटी का टुकड़ा रखता और कभी उनके आगे पानी की कटोरी रखता। लेकिन कैद हुई चिड़िया न कुछ खाती और न कुछ पीती। वह भूखी और प्यासी ही समीर के पिंजरे में दम तोड़ देती। अगले दिन समीर फिर कोई दूसरा पक्षी पकड़ता और उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करता। एक दिन उसने फाख्ता के घोंसले से उसके दो मासूम बच्चों को पकड़ लिया। आदत के अनुसार उन्हें पिंजरे में बंद करके वह बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ देर बाद जब फाख्ता अपने बच्चों के लिए भोजन लेकर आई तो अपने दोनों बच्चों को घोंसले में न पाकर बहुत घबरा गयी। उसने

इधर-उधर बच्चों को ढूंढने के लिए देखा। जल्दी ही उसे अपने बच्चे समीर के पिंजरे में नजर आ गये। वह चिंतित हो उठी और आँखों में आंसू भरकर जोर-जोर से शोर मचाने लगी।

फाख्ता की चीख-चिल्लाहट सुनकर वहाँ बहुत सारे पक्षी, तोते, कबूतर, मैना व कौए आदि आ पहुँचे। सभी ने इकट्ठे होकर बच्चों को बंधन-मुक्त कराने की चेष्टा की। मगर सभी पक्षी बेबस रहे क्योंकि समीर के हाथ में डंडा था। अपने आंगन में इतने पक्षी देखकर वह अपने आपको 'तीस मार खां' समझ रहा था। समीर को भूख ने सताया तो वह भोजन खाने के लिए अन्दर गया। उसने पिंजरा भी उठाकर अन्दर रख दिया था। सारे पक्षी चले गये थे। अब सिर्फ वहाँ बच्चों की माँ ही अकेली थी। वह लगातार चिल्लाहट कर रही थी। शायद उसे अब भी आशा थी कि वह लड़का उसके बच्चों को आजाद कर देगा।

समीर के भोजन करते-करते उसका मित्र व सहपाठी अमितोज, समीर के पास आया। दो मासूम पक्षियों को पिंजरे में बन्द देखकर वह बहुत दुःखी हुआ। समीर की ऐसी घटिया हरकत पर अमितोज को बड़ी पीड़ा हुई। उसने समीर से कहा, ''तुम बहुत जालिम व अत्याचारी हो। इन पक्षियों ने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इनको बन्दी बनाकर रखा है?''

''मैं अत्याचारी कब हूँ? मैं तो इन्हें दाना-पानी भी देता हूँ। अगर यह कुछ खाते-पीते नहीं तो इसमें मेरा क्या दोष है? तुम्हें मुझ पर एतबार नहीं तो खुद देख सकते हो।'' इतना कहकर समीर पिंजरा लेकर बाहर आ गया।

अमितोज, समीर की मूर्खता भाप चुका था। उसने सोचा- अगर समीर को गुस्से से समझाया तो शायद वह न माने। चलो इसे प्यार से ही समझाकर देखते हैं।

उसने समीर से बड़े प्यार से कहा, ''देखो समीर! जिस तरह इन बच्चों की माँ, अपने बच्चों की जुदाई में व्याकुल हो रही है, ईश्वर न

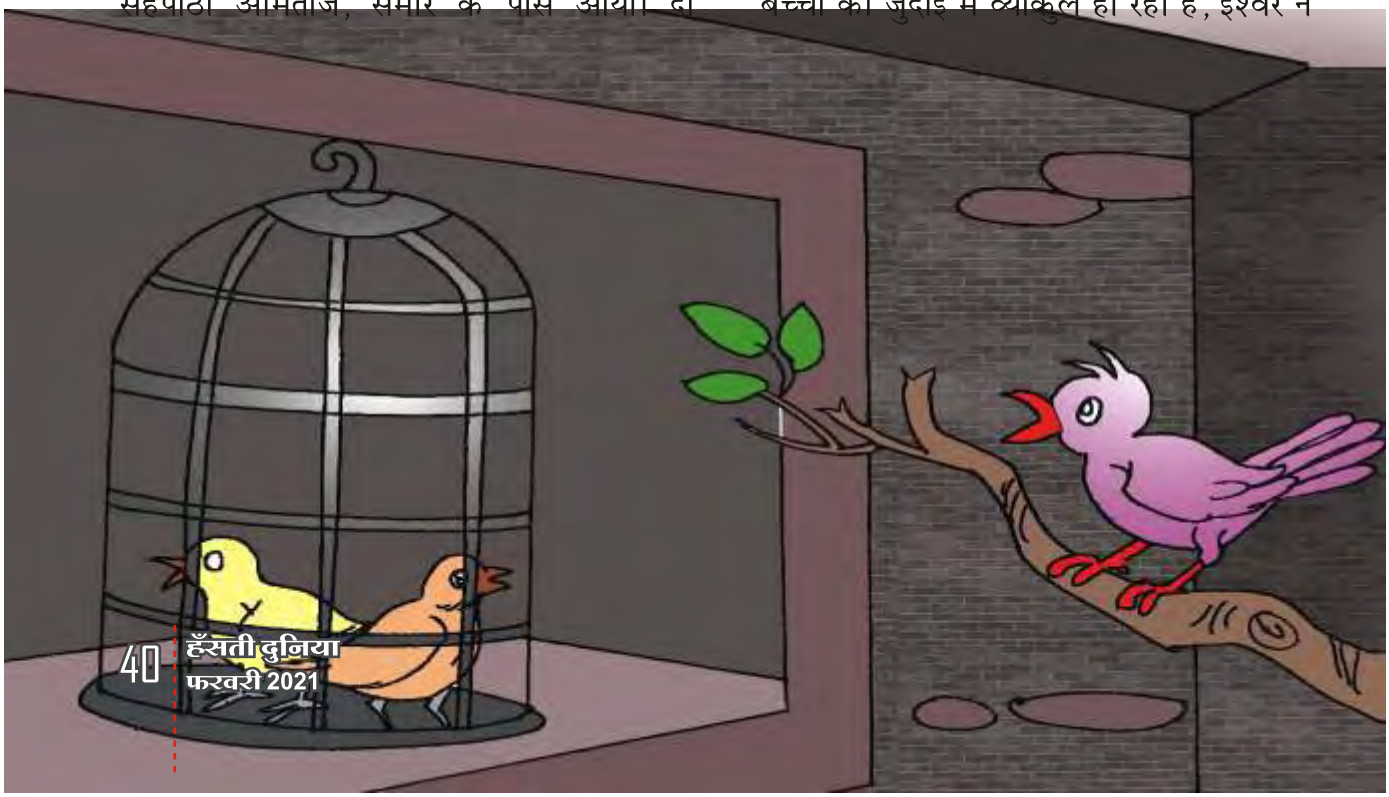

करे, कल तुम्हें भी कोई उठाईगीर उठाकर ले जाये तो तुम्हारी माँ पर क्या बीतेगी? क्या अपनी माँ के बिना तुम खाना खा सकोगे? वह भी जालिम व अत्याचारी लोगों की कैद में।''

देखो मित्र, हर पक्षी आज़ाद रहना चाहता है। जिस तरह हम आज़ाद हैं। अगर तुम्हें पक्षियों से खेलने का ही शौक है तो तुम छत पर इनके लिए दाना और किसी मिट्टी के बर्तन में पानी रख सकते हो। फिर देखना, पक्षियों की आमद से तुम्हारा घर-आंगन कितना सुन्दर हो जायेगा।'' अमितोज की इन बातों का समीर के दिल पर गहरा असर हुआ।

उसे मानना पड़ा कि वह जरूर परिन्दों पर जुल्म करता रहा है। उसने फिर उसी क्षण फाख्ता के दोनों बच्चों को आजाद कर दिया। वे आज़ाद होकर अपनी जननी के पास पहुँच गये थे।

समीर ने अपना पिंजरा भी तोड़कर फेंक दिया था।

● ● ●

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

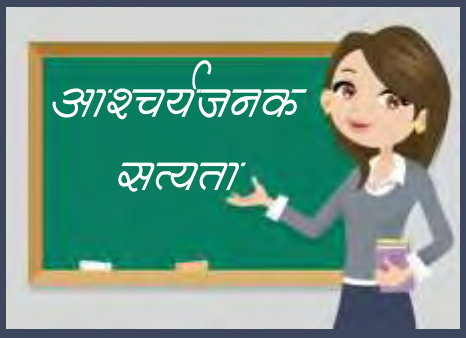

- कोई भी कैलैण्डर तीस साल बाद पुन: इस्तेमाल कर सकते हैं।
- सदैव एक अक्टूबर को वही दिन होगा जो एक जनवरी को।
- सदैव एक अप्रैल को जो दिन होगा वही दिन एक जुलाई को होगा।
- फरवरी, मार्च और नवम्बर मास प्रतिवर्ष एक ही दिन से शुरु होते हैं।
- शक सम्वत् का प्रारम्भ कनिष्क ने किया।
- अर्जेंटीना की राजधानी व्यूनस आयर्स में जनवरी माह में गर्मी पड़ती है।
- उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर क्रमश: 6 महीने की रात और 6 महीने का दिन होता है।
- दुनिया की पहली सुबह और शाम न्यूजीलैण्ड में होती है।
- नार्वे में जून और जुलाई भर सूर्यास्त नहीं होता।

विशेष ले

छोटा-सा तिल : बड़े-बड़े गुण

प्रोटीन और विटामिनों से भरपूर होने के कारण तिल का पौष्टिक खाद्य पदार्थों में बड़ा महत्व माना जाता है। स्वास्थ्यवर्धक होने के अलावा इससे निर्मित चीजें स्वादिष्ट व रूचिकर लगती हैं। ठंड के दिनों में तिल का तेल और तिल से बने विविध व्यंजनों का सेवन करना बड़ा गुणकारी होता है। मकर संक्रांति के पर्व पर हमारे देश में तिल पीसकर बनाए उबटन से नहाना, तिल के लड्डुओं का सेवन करने का प्रचलन है।

तिल को तिल्ली के नाम से भी जाना जाता है। तिल सफेद, लाल और काले तीन प्रकार के मिलते हैं। इन सबमें काला तिल विशेष लाभप्रद माना गया है जो खाने व औषधि प्रयोग के लिए उपयुक्त होता है। सफेद तिल गुणों में मध्यम होता है जिससे तेल का निर्माण किया जाता है। लाल तिल हीन गुण हैं जिनका अधिक प्रयोग व्यंजन बनाने में किया जाता है।

तिल से बनाए जाने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों में गज्जक, रेवड़ी, बर्फी, केक, लड्डू, बिस्कुट आदि प्रमुख हैं। तिलों का तेल भी कम गुणकारी नहीं है। तेल का उपयोग न केवल खाने में किया जाता है बल्कि इससे शरीर की मालिश भी की जाती है। आयुर्वेद में तिल के तेल की मालिश की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। वाग्भट में लिखा है कि प्रतिदिन मालिश करने से बुढ़ापा, थकावट व वायु निवृत्त होती है, दृष्टि बढ़ती है, प्रसन्नता, पुष्टता, आयु और निद्रा में वृद्धि के अलावा त्वचा की सुन्दरता व दृढ़ता प्राप्त होती है।

वैज्ञानिक मतानुसार तिल में 28 प्रतिशत प्रोटीन, 43 प्रतिशत चर्बी, 25 प्रतिशत शर्करा और प्रर्याप्त मात्रा में विटामिन ए, बी, चूना व लोहा होता है। इसमें तेल की मात्रा 48 प्रतिशत पाई जाती है। मस्तिष्क के स्नायु व मांसपेशियों को शक्ति देने वाला पदार्थ लैसीथीन भी तिल में पाया जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार तिल मधुर, स्निग्ध, बलवर्धक, कफ, पित्तनाशक, वातक का क्षय करने वाला, उष्ण, अग्निवर्धक, तृप्तिदायक, दुग्धवर्धक, केशों के लिए लाभप्रद माना गया है। तिल घी और मक्खन से भी जल्दी पच जाने के विशेष गुण से युक्त होते हैं जो शरीर को चिकनाई प्रदान करते हैं।

ठंड के मौसम में तीस से पचास ग्राम तक तिल नियमित रूप से प्रतिदिन रात्रि में सोने से पूर्व खाना स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार से लाभदायक होता है। अच्छी प्रकार चबाकर खाने से दांत, मसूढ़े, दाढ़ व जबड़े मजबूत व निरोगी बनते हैं और कान की बीमारियां नहीं होती। शरीर में शक्ति आती है, स्नायुविक तंत्र व पेशियों को बल मिलता है, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है।

जिनके बाल असमय में सफेद हो गए हों, झड़ते हों या गंजापन आ गया हो उन्हें तिल का नियमित सेवन करना चाहिए। इससे बालों की समस्त बीमारियों में लाभ होता है। ठंड के मौसम में गुड़ और तिल का किया गया सेवन दिल और दिमाग को ताकत पहुँचाता है और मानसिक दुर्बलता तथा तनाव दूर करता है। मांसपेशियों के हृष्ट-पुष्ट व दृढ़ होने से बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। चेहरे पर चमक आती है।

पाचन क्रिया को सुव्यवस्थित चलाने हेतु तिल में विशेष गुण होता है। इसके नियमित सेवनकर्ता को भूख अच्छी लगती है। अजीर्ण, कब्ज, चिड़चिड़ेपन, स्मरणशक्ति की कमी, थकावट आदि की शिकायत नहीं होती।

अनेक प्रकार की बीमारियों में तिल सेवन कर लाभ उठाया जा सकता है। चर्म सम्बन्धी विकारों में तिल के तेल की नियमित मालिश करना विशेष रूप से लाभप्रद पाया गया है जिससे त्वचा की खुश्की दूर होकर, रेशम-सी चिकनी व कांतिपूर्ण बनने में सहायता मिलती है।

दांतों के लिए भी तिल फायदेमंद हैं सवेरे दातुन या मंजन के बाद काले तिल बिना कुछ खाये-पिये चबा-चबाकर खाने से दांत मजबूत होते हैं।

मोच आ जाने पर तिल की खल पीसकर थोड़ा पानी डालकर गर्म कर लें। सहने योग्य गर्म-गर्म ही मोच पर बांधे। लाभ होगा।

यदि सर्दी लगकर सूखी खांसी हो गई है तो चार चम्मच तिल और इतनी ही मिश्री मिलाकर एक गिलास पानी में इतना उबालें कि पानी आधा रह जाए। फिर इसे पी जाएं। यह प्रयोग दिन में तीन बार करें।

सूखी खांसी, फेफड़ों के रोग, श्वास, नेत्र रोग, गठिया आदि की बीमारियों में काला तिल लाभप्रद होता है। इसमें संदेह नहीं कि यदि हम शरद ऋतु में तिलों का विविध रूपों में, नियमित रूप से सेवन करें और तिल के तेल की मालिश करें तो हमारा शरीर सदैव स्वस्थ निरोगी बना रहेगा।

पढ़ो और हँसो

राजेश : माँ आज दौड़ प्रतियोगिता हुई थी। मैं द्वितीय आया हूँ।

माँ : बेटा कितने प्रतियोगी थे।

राजेश : दो।

पिताजी : (पुत्र से) आज का प्रश्न-पत्र कैसा था?

पुत्र : पापा, गुलाबी रंग का था।

डॉक्टर : (मरीज से) गहरी सांस लो और तीन बार सात बोलो।

मरीज : (गहरी सांस लेकर) इक्कीस।

कल्पना : तुम्हारी छतरी में छेद है।

मोना : मुझे पता है क्योंकि यह मैंने ही किया है।

कल्पना : क्यों?

मोना : जब बारिश बन्द हो जाए तो मुझे पता चल जाता है।

एक अपराधी को फांसी पर लटकाने से पहले जेलर ने उसकी अन्तिम इच्छा पूछी तो अपराधी बोला– मुझे आम खाना है।

जेलर : वे अभी नहीं मिलेगें। वे तो 6 महीने बाद मिलेंगे।

अपराधी : तो मैं 6 महीने तक इन्तजार कर लूंगा।

लाली बारिश में सड़क पर घूम रही थी। घूमते-घूमते उसका पैर रपट गया और वह सड़क पर गिर पड़ी। तभी ऊपर से बिजली कड़की तो लाली बोली– वाह भगवान! पहले तो गिराते हो फिर फोटो खींचते हो।

डॉक्टर : आपके एक्स-रे में आपकी हड्डी टूटी हुई है।

पप्पू : चलो भगवान का शुक्र है कि एक्स-रे में ही टूटी हुई है, सच में टूटी होती तो काफी खर्चा होता।

निर्मला : (गीता से) क्या बात है मटर-पनीर में पनीर नज़र नहीं आ रहा है।

गीता : अरे तुमने कभी गुलाबजामुन में गुलाब देखा है क्या?

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

केशर उपासना से बोला– जाओ आईना लेकर आओ मैंने अपना चेहरा देखना है।

उपासना खाली हाथ लौटकर बोली– केशर किसी भी दर्पण में आपका चेहरा नहीं दिखाई दिया। सबमें मैंने देखा मेरा ही चेहरा था।

मैडम : (पूजा से) बेटा, क्या तुम बड़े होकर टीचर बनोगी?

पूजा : जी नहीं।

मैडम : क्यों?

पूजा : मैडम जी, क्या मैं सारी उम्र स्कूल ही आती रहूंगी।

थानेदार : (चोर से) तूने चोरी क्यों की?

चोर : साहब! दुकान के ऊपर लिखा था– सुनहरा अवसर है लाभ उठाओ।

गुड़िया : (अमन से) भैया मैं बर्फ खाऊंगी।

अमन : गुड़िया सर्दियों में बर्फ नहीं खाते हैं।

गुड़िया : भैया, मैं बर्फ गर्म करके खा लूंगी।

पपलू : क्या कल तुम्हारी पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही है।

टपलू : हमारी क्लास तो नहीं, पर हाँ, बच्चे जरूर पिकनिक पर जा रहे हैं।

– सुनीता जयसवाल (वापी)

पुलिस में भर्ती हेतु आये एक उम्मीदवार से साक्षात्कार में पूछा– भीड़ को तितर-बितर करने के लिए क्या करना चाहिए?

उम्मीदवार बोला– सर! चंदा मांगना शुरू कर देना चाहिए।

धन्नू जी का नौकर एकदम गंवार था। एक दिन धन्नू जी ने उसे समझाया– तुम सभ्यता सीखो। किसी को भी संबोधन करते समय उसके नाम के आगे 'जी' लगाया करो।

थोड़ी देर में नौकर दौड़कर धन्नू जी के पास आया।

साहब जी! साहब जी! बाहर कुत्ते जी ने मुर्गे जी को पकड़ लिया है।

भिखारी : सेठ जी, मुझे कुछ दो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।

सेठ : तेरे पास 100 का छुट्टा है?

भिखारी : हाँ है न।

सेठ : तो पहले वे खर्च ले।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

लघु कथा : डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

झूठी मित्रता का फल

एक नदी के किनारे चार सहेलियां रहा करती थीं। छिपकली, चुहिया, लोमड़ी व बकरी। वे परस्पर बोलती व हँसती। कुल मिलाकर मस्त जीवन जी रही थी।

एक दिन उनका मन नदी पार जाने और सैर करने को हुआ। एक कछुआ भी वहीं रहता था। चारों ने कहा– हम सच्ची सहेलियां हैं, भाई कछुआ। तुम हम चारों को पीठ पर बैठाकर नदी पार करा दो तो अति प्रसन्नता होगी।

कछुए ने पहले तो आनकानी की परन्तु सच्ची सहेलियां होने की बात उसे अच्छी लगी। उसने कहा– ऐसी बात है तो तुम चारों मेरी पीठ पर बैठ जाओ, मैं नदी पार करा देता हूँ।

चारों ने सवारी गांठी। कछुआ चल पड़ा। कुछ दूर चलने पर उसने कहा– ''वजन बहुत हो गया, तुम में से एक को उतरना पड़ेगा। इतना वजन हम नहीं ढो पाएंगे।'' चुहिया ने छिपकली को पानी में धकेल दिया। कुछ दूर चलने पर एक और के उतरने की बात कही। लोमड़ी ने चुहिया को पानी में उतार दिया। कुछ दूर चलने पर एक के और उतरने का आग्रह हुआ। बकरी लोमड़ी से तगड़ी थी, उसने लोमड़ी को बीच धार में धकेल दिया। अब बकरी अकेली रह गई।

कछुआ बोला– ''चारों की चारों तुम पक्की सहेली थीं। सबको साथ ही पार होना था। जब सबल द्वारा निर्बल को धकेले जाने का सिलसिला चल रहा है तो तुम्हारी मित्रता झूठी है न। मैंने तो सच्ची सहेलियों को पार करने का वायदा किया था।'' यह कहकर कछुए ने गहरी डुबकी लगाई और बकरी को उसी प्रकार डुबो दिया जैसे कि पहले तीनों बह गई थीं।

संग्रहकर्ता : शुभम अग्रवाल

लाभदायक बातें

शान्त स्वभाव, उत्साह, सत्यनिष्ठा, धैर्य, सहनशक्ति, नम्रता, समता, साहस, परोपकार, ईमानदारी, दया।

हानिकारक बातें

अधिक बोलना, अधिक शयन, अधिक भोजन, अधिकशृंगार, हीन भावना, अहंकार, झूठ बोलना।

कविता : जी.पी. शर्मा

जागो बच्चो हुआ विहान

जागो बच्चो हुआ विहान,
मीठे कलरव चिड़ियां करती,
छोड़ के घोंसला नभ में उड़ती,
कंधे पर हल-हेंगा लेकर–
खेतों को चल पड़े किसान।

जागो बच्चो हुआ विहान,
पूरब दिशा में छायी लाली,
चारों ओर फैली उजियाली,
सतरंगी किरणों को लेकर–
देखो, निकल पड़े दिनमान।

जागो बच्चो हुआ विहान,
देखो डाली डोल रही है,
काली कोयल बोल रही है,
अपनी बोली में वह तुमको–
रह-रहकर देती है तान।

जागो बच्चो हुआ विहान,
तुम भी जागो, आँखें खोलो,
अपनी भाषा में कुछ बोलो,
जग के होने वाले हो तुम–
एक से एक महान।

जागो बच्चो हुआ विहान,
मन के निर्मल, स्वच्छ सलौने,
नितदिन नूतन अजब खिलौने,
भेद नहीं है ऊँच-नीच का–
तू बाल रूप भगवान।

संकलनकर्ता :अंकुर राय

क्या आप जानते हैं?

अंतरिक्ष में प्रथम

- स्क्वाड्रन लीडर राकेश शर्मा अंतरिक्ष में जाने वाले प्रथम भारतीय हैं।
- अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की प्रथम महिला कल्पना चावला थी।
- नील आर्मस्ट्रांग तथा एडविन ऐल्ड्रिन ये (दोनों अमेरिका) चन्द्रमा के धरातल पर कदम रखने वाले प्रथम यात्री थे। ये दोनो यात्री 21 जुलाई 1969 को चन्द्रमा पर उतरे थे।
- यूरी गगारिन (तत्कालीन सोवियत संघ) अंतरिक्ष में जाने वाला प्रथम व्यक्ति था।
- लूना-16 (तत्कालीन सोवियत संघ) प्रथम मानवरहित अंतरिक्ष यान था जो स्वत: चन्द्र तल पर उतरा और 24 सितम्बर 1970 में स्वत: उठकर पृथ्वी पर वापस आया।
- वेलेन्टीना तेरेश्कोवा (तत्कालीन सोवियत संघ) अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम महिला थी।
- चन्द्र तल पर मनुष्य को उतारने वाला प्रथम देश अमेरिका है।
- अलेक्सी लियोनेव अंतरिक्ष में तैरने वाला प्रथम व्यक्ति था।
- अमेरिकी स्पेस शटल की पहली महिला चालक एलिन कॉलिन्स थीं।
- सात बार अंतरिक्ष यात्रा पर जाने का गौरव अंतरिक्ष यात्री जेरी लिन रॉस को प्राप्त है।
- भारत ने अपना प्रथम साउंडिंग रॉकेट 'नाइक अपाचे' 21 नवम्बर 1963 को छोड़ा था। यह सबसे पहली सफल उड़ान थी।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 फरवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से रंग भरो प्रतियोगिता कुछ समय के लिए प्रकाशित करने में असमर्थ थे। पाठकों के अनुरोध पर रंग भरो प्रतियोगिता पुन: प्रारम्भ की जा रही है। पाठकों से अनुरोध है कि सामने दिये गये चित्र में रंग भरकर भेजें।

– सम्पादक

रंग भरो

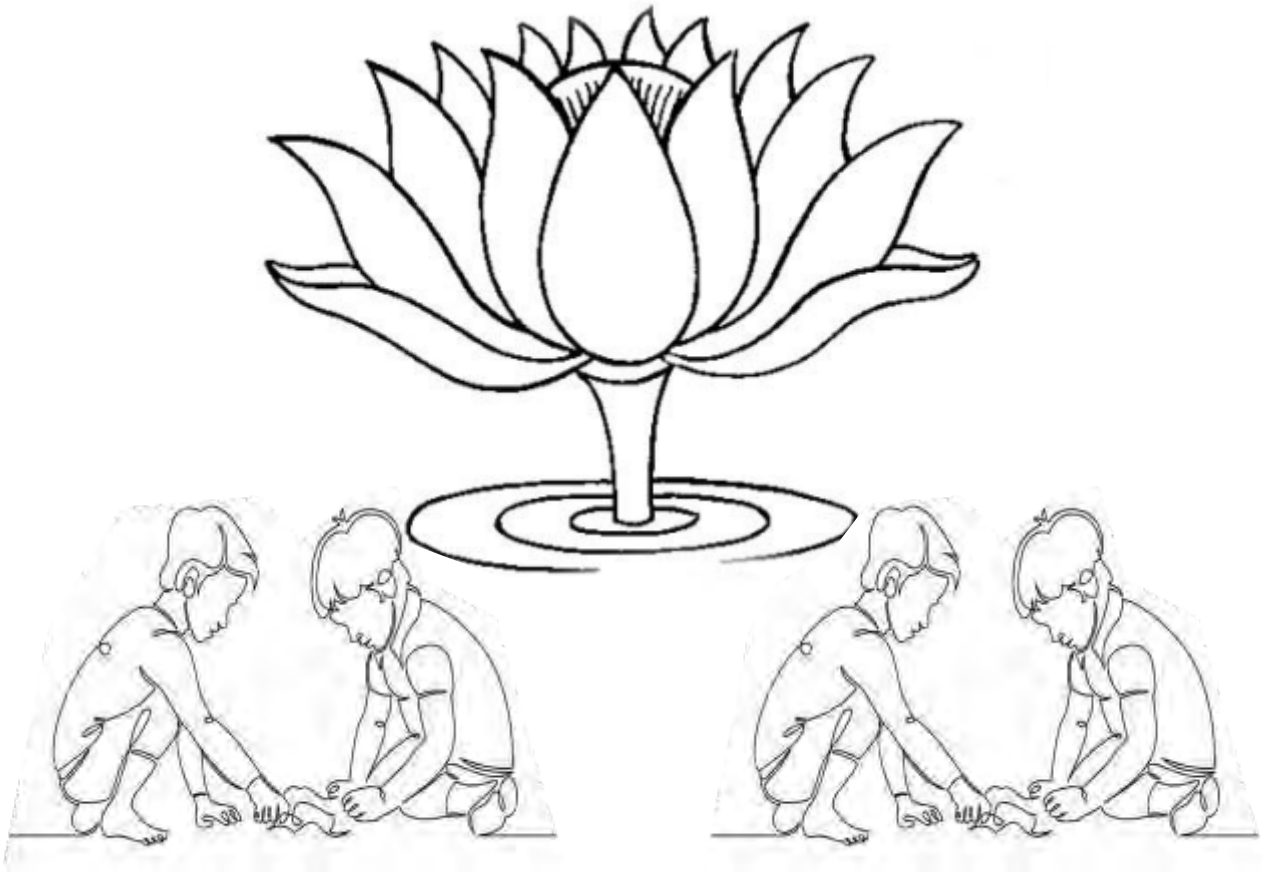

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री.....

पूरा पता : .....

.....पिन कोड.....

संग्रहकर्ता : महन्थ राजपाल (जौनपुर)

कभी न भूलो

- सत्संग बड़े भाग्य से मिलता है। सत्संग का अर्थ होता है सत् का संग अर्थात् ईश्वर का संग। – **निरंकारी राजमाता जी**
- भय और वैर से मुक्ति पानी हो तो 'अहिंसा' या 'प्रेम' का मार्ग अपनाना होगा। इसके सिवाय दूसरा कोई मार्ग हो ही नहीं सकता। – **भगवान महावीर**
- फूल खिलने दो मधुमक्खियां अपने आप उसके पास आ जायेंगी। चरित्रवान बनो जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा। – **रामकृष्ण परमहंस**
- महानता दूसरों के दोषों को छिपाती है, तुच्छता दूसरे के दोषों को निकालती है। – **तिरुवल्लुवर**
- धर्मरहित विज्ञान लंगड़ा है व विज्ञान रहित धर्म अंधा। – **आइंस्टीन**
- जो आत्म-संयमी नहीं है वह स्वतंत्र नहीं है। – **पाइथागोरस**
- हमारे मन के विचार कर्म के पथ-प्रदर्शक होते हैं। – **प्रेमचन्द**
- कोई भी अच्छा कार्य या आदर्श कभी नहीं मिटता। वह मानव जाति में सदा जीवित रहता है। – **सैमुअल स्माइल्स**
- प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला चुम्बक है। – **अज्ञात**
- सम्पूर्ण विश्व मुझमें ही व्याप्त है तथा विश्व के समस्त जीवों में ही व्याप्त हूँ। – **भगवान श्रीकृष्ण**
- ब्रह्म के स्वरूप का प्रेम जिन्होंने पा लिया फिर किसी का डर नहीं लगता। – **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**
- ईमानदार आदमी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। – **एलेक्जेंडर पोप**
- मानव को अपनी मानवता स्थिर रखने में सदा सावधान व दक्ष रहना चाहिए। – **श्रीनाथ जी**
- मानवता प्रेम का दूसरा नाम है।– **महात्मा बुद्ध**
- सम्पूर्ण विश्व ही परमात्मा का महा मन्दिर ह । – **वियोगी हरि**
- एक देश की महानता, बलिदान और प्रेम उस देश के आदर्शों पर निहित करता है। – **सरोजिनी नायडू**
- साहस सभी मानवीय गुणों में प्रथम है क्योंकि यह वो गुण है जो आप में अन्य गुणों को विकसित करता है। – **अरस्तु**
- दो चीजों की आदत डालिए, मदद करने की या कम से कम कोई नुकसान न पहुँचाने की। – **हिपोक्रेटिस**
- गुण न हो तो रूप व्यर्थ है। विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है। उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है। भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है। होश न हो तो जोश व्यर्थ है। परोपकार न करने वाले का तो जीवन व्यर्थ है। – **अज्ञात**

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
Kids Divine
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
Bhakti
Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
Voice Divine
DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : : :
Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
License No. U (DN) - 23/2021-2023
Licensed to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओंः सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org और patrika@nirankari.org तथा

WhatsApp Mobile No. 9266629841 पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेलः sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21st & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)